संस्कृत पुस्तक-7

(सातवीं कक्षा के लिए)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड
साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण : 2017-18..................... 18,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction and annotation etc., are reserved by the Punjab Government.

लेखक : डॉ० जीत सिंह खोखर
डॉ० प्रियतम चन्द्र शर्मा

सम्पादिका : श्रीमती सरोज आर्य

चित्रकार : श्रीमती कुलजीत कौर

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों का जाली प्रकाशन, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत ग़ैरकानूनी है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

मूल्य : ₹ 32.00

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित एवं मैसर्स नोवा पब्लिकेशन्ज़, सी-51, फोकल प्वाईंट एक्सटेन्शन, जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के अधिनियम (एक्ट) के अनुसार बोर्ड का प्रमुख उत्तरदायित्व सभी विषयों के पाठ्यक्रम तैयार करना और उन पाठ्यक्रमों के अनुसार पाठ्य-पुस्तकें तैयार करना और उन्हें नवीन शिक्षा नीति के अनुसार संशोधित करना है। इन संशोधित पाठ्यक्रमों के आधार पर विभिन्न विषयों की पाठ्य-पुस्तकें तैयार की जा रही हैं। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत संस्कृत विषय की मिडल, मैट्रिक तथा ग्यारहवीं, बारहवीं श्रेणियों की पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने की योजना बनाई गयी है

यह पुस्तक दाखिला वर्ष 1998 से सातवीं श्रेणी के लिए संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गयी है। पुस्तक के व्याकरण भाग बोर्ड में कार्यरत श्रीमती सरोज आर्य विषय विशेषज्ञा द्वारा लिखा गया है। पुस्तक को विद्यार्थियों के मानसिक स्तरानुरुप बनाने का यथेष्ट प्रयत्न किया गया है। आवश्यक व्याकरण तथा शब्दकोश को पाठ्य-पुस्तक का अंग बना दिया गया है।

आशा की जाती है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। फिर भी पुस्तक को और अधिक लाभदायक बनाने के लिए विद्वानों द्वारा दिए गए सुझाव, बोर्ड द्वारा सादर स्वीकार किए जायेंगे।

चेयरपर्सन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
प्रथमः पाठः	ईश-वन्दना	1
द्वितीयः पाठः	बाल-कृष्णः	3
तृतीयः पाठः	अनुशासनम्	5
चतुर्थः पाठः	मम विद्यालयः	7
पञ्चमः पाठः	उपवनम्	10
षष्ठः पाठः	लोकोक्तयः	13
सप्तमः पाठः	मम जनकः	15
अष्टमः पाठः	राजमार्गस्य नियमाः	17
नवमः पाठः	सुभाषितानि	19
दशमः पाठः	**श्री गुरु तेग बहादुरः**	21
एकादशः पाठः	अश्वः	24
द्वादशः पाठः	अनृत-फलम्	27
त्रयोदशः पाठः	होलिका	30
चतुर्दशः पाठः	चण्डीगढ़ः	32
पञ्चदशः पाठः	विद्या-गौरवम्	34
षोडशः पाठः	वसन्त-ऋतुः	36
सप्तदशः पाठः	सुभाषितानि	38
अष्टादशः पाठः	वैशाखी-मेलकः	**40**
नवदशः पाठः	**वृषभ-मशकयोः कथा**	42
विंशः पाठः	दानवीर-कर्णः	44
एकविंशः पाठः	स्वच्छता	46
द्वाविंशः पाठः	पर्यावरणम्	48
त्रयोविंशः पाठः	अभिमानस्य परिणामः	51
चतुर्विंशः पाठः	पितृभक्त-श्रवणः	54
पञ्चविंशः पाठः	**नीति श्लोकाः**	56
व्याकरण-भागः		58
शब्दकोशः		80

प्रथमः पाठः

ईश-वन्दना

हे प्रभो, त्वं दयालुः,
क्षमाशीलः सर्वविघ्ननाशकः ।
त्वमेव च दीनबन्धुः,
त्वमेव असि गुरूणामपि गुरुः ॥१ ॥

हे ईश, विद्यां यच्छ,
भवतु जनानां मतिः परहिताय
पालयाम निजधर्मम्,
भवतु बलिदानं देशाय ॥२ ॥

भवतु शान्तिः विश्वे,
अहिंसापूजकाः भवन्तु मनुजाः ।
भवतु सुखं सर्वत्र,
स्नेहः भवतु मानवेन सह ॥३ ॥

शब्दार्थ :

दयालु: = दया वाला
अहिंसापूजका: = अहिंसा के पुजारी
मनुजा: = मनुष्य
सर्वत्र = सब जगह पर
विश्वे = संसार में
परहिताय = दूसरों की भलाई के लिए

क्षमाशील: = क्षमा कर देने वाला
सर्वविघ्ननाशक : = सभी विघ्नों का नाश करने वाला
दीनबन्धु: = गरीबों का मित्र
असि: = हो
यच्छ = दो
मति: = बुद्धि

अभ्यास

1. ईश-वन्दना को कण्ठस्थ करो।
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-
   (क) प्रभु के कोई चार गुण लिखो।
   (ख) बालक ईश्वर से क्या माँगते हैं ?
   (ग) सभी मनुष्य कैसे हों ?
3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :-
   (क) हे ईश, विद्यां यच्छ,

   पालयाम निजधर्मम्,

   (ख) ------------

   क्षमाशील: सर्वविघ्ननाशक:।

   त्वमेव असि गुरूणामपि गुरु: ॥
4. अन्तिम पद्य का हिन्दी में अनुवाद करो।
5. संस्कृत में अनुवाद करो :-
   (क) ईश्वर संसार का पालक है।
   (ख) हे ईश्वर, हमें विद्या दो।
   (ग) सब जगह सुख हो।
   (घ) तुम दयालु हो।
   (ङ) संसार में शान्ति हो।

*****

द्वितीयः पाठः

बाल-कृष्णः

श्री कृष्णस्य जन्म मथुरायाम् अभवत्। परम् गोकुले नन्दः यशोदा च तम् अपालयताम्। बालकृष्णस्य रूपम् मनोहरम् आसीत्। मयूर-मुकुटम् रूपस्य शोभाम् वर्धयति स्म।

बालकृष्णस्य चरितम् मोहनम् आसीत्। प्रांगणे सः यशोदाम् 'मां--मां', नन्दम् च 'बा---बा' अकथयत्। कदाचित् सः नवनीतम् अखादत्, नवनीतेन च मुखम् अलिम्पत्। यदा सः जानुभ्याम् अचलत् कन्दुकेन च अक्रीडत् तदा कटितटस्य घंटिकाः मधुरम् अरणन्।

सः वेणुवादने अपि कुशलः आसीत्। सः गोपैः सह धेनूः अचारयत् वेणुम् च अवादयत्। गोपिकाः वेणुस्वरेण कृष्णम् प्रति अधावन्। बालकृष्णः सुन्दरम् अनृत्यत्।

एवम् श्रीकृष्णः निज बाललीलाभिः गोपिकानाम् गोपानाम् च चित्तम् अमोहयत्।

शब्दार्थः

रूपम् = शक्ल, सूरत	अलिम्पत् = लीप लेता था
मयूर-मुकुटम् = मोर-मुकुट	जानुभ्याम् = घुटनों के बल

वर्धयति स्म = बढ़ाता था	कन्दुकेन = गेंद से
प्रांगणे= आंगन में	कटितटस्य = कमर की
मोहनम् = मोह लेने वाला	घंटिका = घंटियाँ
नवनीतम् = मक्खन	मधुरम् अरणन् = मीठा शब्द करतीं थीं।
कदाचित् = कभी	वेणुवादने= बांसुरी बजाने में
कुशल: = चतुर	अवादयत् = बजाता था
वेणुस्वरेण = बांसुरी की आवाज़ से	अमोहयत् = मुग्ध कर देता था

अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) श्रीकृष्ण का जन्म कहाँ हुआ था ?

(ख) बालकृष्ण का पालन-पोषण किसने किया ?

(ग) बालकृष्ण का रूप कैसा था ?

(घ) बालकृष्ण नन्द को क्या कह कर पुकारता था ?

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों (पदों) में से उपयुक्त शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरो :-

(मोहनम् कुशल: सुन्दरम्)

(क) बालकृष्णस्य चरितम् ....आसीत् ।

(ख) स: वेणुवादने अपि ....आसीत् ।

(ग) बालकृष्ण : .... अनृत्यत् ।

प्रश्न 3. 'तत्' (पुं) शब्द के प्रथमा और द्वितीया विभक्ति में रूप लिखो।

प्रश्न 4. रेखांकित पदों में यथानिर्दिष्ट परिवर्तन करें —

(क) <u>स:</u> नवनीतम् <u>अखादत्</u> ? (मध्यम पुरुष में)

(ख) <u>गोपिका:</u> कृष्णम् प्रति <u>अधावन्</u> । (एक वचन में)

(ग) <u>स:</u> वेणुवादने अपि कुशल : । (उत्तम पु० ए० व० में)

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क) श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ।

(ख) बालकृष्ण का रूप मनोहर था।

(ग) वह मक्खन खाता था।

(घ) बालकृष्ण सुन्दर नाचता था।

*****

तृतीयः पाठः

अनुशासनम्

मानवजीवनम् श्रेष्ठ-जीवनम् अस्ति। श्रेष्ठतायाः मूलम् अनुशासनम् अस्ति। यत्र अनुशासनम् तत्रैव विकासः भवति। अनुशासनम् जनानाम् कृते आवश्यकम्।

अनुशासनम् छात्रजीवनस्य आधारः भवति। यः छात्रः अनुशासने तिष्ठति, सः पठने प्रवीणः जीवने च प्रगतिम् करोति। सः समाजे सम्मानम् अधिगच्छति। यः छात्रः अनुशासनम् न पालयति, सः जीवने सफलः न भवति।

भो छात्राः! विद्यालये सदा अनुशासनम् पालयत। समये विद्यालयम् गच्छत। तत्र पाठान् ध्यानेन पठत। पठनात् प्रमादम् न कुरुत। समये खेलत। यत्र अनुशासनम् भवति, तत्र जनाः सुखिनः भवन्ति।

किम् बहुना--

अनुशासनम् हि सफलतायाः सोपानम् अस्ति।

शब्दार्थः

अनुशासनम् = अनुशासन, नियम
श्रेष्ठतायाः = महानता का
अधिगच्छति = प्राप्त करता है (अधि+ गम्)
सोपानम् = सीढ़ी
कृते लिए
प्रगतिम् = उन्नति को
सुखिनः = सुखी
पठनात् = पढ़ने से
प्रमादम् = आलस्य

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) मानव जीवन कैसा जीवन है ?
(ख) अनुशासन किसके जीवन का आधार है ?
(ग) अनुशासन के कोई दो लाभ लिखो।
(घ) छात्र को विद्यालय में अनुशासन का पालन कैसे करना चाहिए ?
(ङ.) सफलता की सीढ़ी क्या है ?

प्रश्न 2. यथा निर्दिष्ट लकार परिवर्तन करो :-

(क) समये खेलत। (लङ्. लकार)
(ख) सः समाजे सम्मानम् अधिगच्छति। (लोट् लकार)
(ग) समये विद्यालयम् गच्छत। (लृट् लकार)

प्रश्न 3. रिक्त स्थान भरो :-

(क) **सः समाजे** ----अधिगच्छति। (**अपमानम्/सम्मानम्**)
(ख) यत्र अनुशासनम् तत्रैव---भवति। (**विनाशः/विकासः**)
(ग) तत्र जनाः-----भवन्ति (सुखिनः/दुःखिनः)

प्रश्न 4. सार्थक वाक्य-रचना करो :-

समये	सुखिनः	गच्छत
पाठान्	विद्यालयम्	पठत
जनाः	ध्यानेन	भवन्ति

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क) समय पर खेलो।
(ख) मानव जीवन श्रेष्ठ जीवन है।
(ग) छात्र अनुशासन का पालन करता है।
(घ) छात्र पाठ पढ़ता है।
(ङ) वह सम्मान प्राप्त करता है।

*****

चतुर्थः पाठः

मम विद्यालयः

मम विद्यालयः विशालक्षेत्रे स्थितः अस्ति। विद्यालयस्य भवनम् अपि विशालम् सुन्दरम् च अस्ति। तत्र अनेके छात्राः पठन्ति। विद्यालये विंशतिः अध्यापकाः अध्यापिकाः च सन्ति। ते छात्रान् स्नेहेन पाठयन्ति।

विद्यालयस्य मुख्याध्यापकः सुयोग्यः प्रबन्धकः अस्ति। सर्वे अध्यापकाः छात्राः च तम् सम्मानयन्ति।

मम विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति। छात्राः तत्र समाचारपत्राणि विविधानि पुस्तकानि च पठन्ति।

विद्यालयस्य क्रीडाक्षेत्रम् अपि विशालम् अस्ति। सांयकाले छात्राः तत्र क्रीडन्ति।

विद्यालयस्य मध्ये उपवनम् अस्ति। तत्र अनेकानि पुष्पाणि विकसन्ति। छात्राः अर्धावकाशे तत्र समयम् यापयन्ति।

किम् बहुना, मम विद्यालयः एकः आदर्शः विद्यालयः अस्ति।

शब्दार्थाः

अनेके = अनेक	विकसन्ति = खिलते हैं
विंशति = बीस	यापयन्ति = व्यतीत करते हैं
स्नेहेन = प्यार से	आदर्शः = नमूने का, आदर्श
पाठयन्ति = पढ़ाते हैं	पुष्पाणि = फूल
क्रीडन्ति = खेलते हैं	अर्धावकाशे = आधी छुट्टी के समय

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) विद्यालय में कितने अध्यापक और अध्यापिकाएँ हैं ?

(ख) पुस्तकालय में छात्र क्या पढ़ते हैं ?

(ग) विद्यालय का क्रीडा क्षेत्र कैसा है ?

(घ) अध्यापक छात्रों को कैसे पढ़ाते हैं ?

(ङ) आधी छुट्टी में छात्र समय कहाँ बिताते हैं ?

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में से ठीक शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरो :-

(पुस्तकालयः, स्नेहेन, आदर्शः, छात्राः, पुष्पाणि)

(क) मम विद्यालयः एकः ....विद्यालयः अस्ति ।

(ख) मम विद्यालये एकः .... अस्ति ।

(ग) ते छात्रान् ....पाठयन्ति ।

(घ) सायंकाले: ....तत्र क्रीडन्ति ।

(ङ.) तत्र अनेकानि.........विकसन्ति।

प्रश्न 3. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार रिक्त स्थान भरो :-

(क)	विद्यालयः	विद्यालयौ	विद्यालयाः
	पुस्तकालयः	-----	-----
	अध्यापकः	-----	-----
(ख)	पत्रम्	पत्रे	पत्राणि
	सुन्दरम्	-----	-----
	क्षेत्रम्	-----	-----

प्रश्न 4. रेखांकित शब्दों में यथानिर्दिष्ट वाक्य परिवर्तन करो :-

(क) ते छात्रान् स्नेहेन पाठयन्ति (एक वचन में)

(ख) छात्राः तत्र समयम् यापयन्ति। (एक वचन में)

(ग) अध्यापकाः तम् सम्मानयन्ति। (एक वचन में)

(घ) तत्र पुष्पाणि विकसन्ति। (एक वचन में)

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करोः-

(क) विद्यालय का भवन सुन्दर है।

(ख) क्रीडाक्षेत्र में छात्र खेलते हैं।

(ग) वे छात्रों को स्नेह से पढ़ाते हैं।

(घ) मेरा विद्यालय एक आदर्श विद्यालय है।

****

पंचमः पाठः

उपवनम्

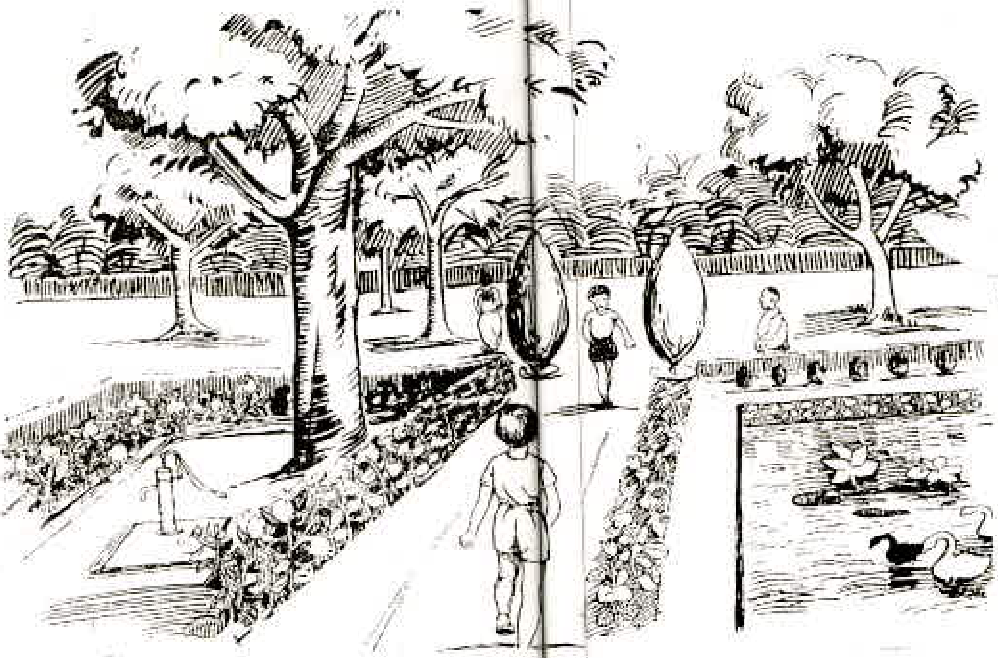

मम गृहस्य अग्रे उपवनम् अस्ति। अत्र वृक्षाः, लताः, पादपाः हरितानि तृणानि च सन्ति। वृक्षेषु फलानि सन्ति। बालकाः वृक्षेभ्यः फलानि त्रोटयन्ति खादन्ति च। लतासु खगाः कूजन्ति। लतानाम् सुन्दराणि पुष्पाणि सन्ति। भ्रमराः पुष्पेषु गुंजन्ति। जनाः पुष्पाणाम् मालाः कण्ठे धारयन्ति।

उपवने विविधाः पादपाः सन्ति। मालाकारः पादपान् सिञ्चति। उपवनस्य हरितानि तृणानि मनः आकर्षन्ति। सन्ध्याकाले बालाः अत्र उपविशन्ति खेलन्ति च।

उपवनस्य मध्ये एकः सरोवरः अपि अस्ति। शुकाः, चटकाः, कपोताः, कोकिलाः च तत्र कलरवम् कुर्वन्ति। बालकाः विहगान् पश्यन्ति प्रसीदन्ति च। उपवनस्य शोभा अतिरमणीया अस्ति।

शब्दार्थ :

मम = मेरा	धारयन्ति = पहनते हैं	उपवनम् = बगीचा
विविधा: = अनेक प्रकार के	अग्रे = आगे	मालाकार: = माली
लता: = बेलें	सिञ्चति = सींचता है	पादपा: = पौधे
शुका: = तोते	हरितानि = हरा	चटका: = चिड़ियाँ
तृणानि = घास	कपोता: = कबूतर	त्रोटयन्ति = तोड़ते हैं
कोकिला: = कोयलें	खगा: = पक्षी	कूजन्ति = चहचहाते हैं
कलरवम् कुर्वन्ति = चहचहाते हैं	पुष्पाणि = फूल	भ्रमरा: = भौंरे
विहगान् = पक्षियों को	माला: = हार, मालाएँ	प्रसीदन्ति = प्रसन्न होते हैं
कण्ठे = गले में	अतिरमणीया = बहुत सुन्दर	

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

(क) बालक वृक्षों से क्या तोड़ कर खाते हैं ?

(ख) लोग किसकी माला गले में पहनते हैं ?

(ग) माली उपवन में क्या करता है ?

(घ) उपवन के बीच में क्या है ?

(ङ.) बालक किसको देखकर प्रसन्न होते हैं ?

प्रश्न 2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से ठीक शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरो :-

(क) वृक्षेषु........सन्ति। (फलानि, तृणानि)

(ख) बालका:......पश्यन्ति। (मृगान्, विहगान्)

(ग) उपवनस्य......अति रमणीया अस्ति। (घटा, शोभा)

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के यथानिर्दिष्ट विभक्तियों में रूप लिखो:-

उपवन (प्रथमा एकवचन) उपवनम्।

फल (प्रथमा द्विवचन) --------

पुष्प (प्रथमा बहुवचन) --------

तृण (प्रथमा एकवचन) --------

प्रश्न 4. सार्थक वाक्य बनाइये :-

मालाकार:	विहगान्	सिञ्चति।
बालका:	फलानि	पश्यन्ति।
वृक्षेषु	पादपान्	सन्ति।

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क) माली पौधों को सींचता है।

(ख) बालक पक्षियों को देखते हैं।

(ग) भौंरे फूलों पर गूँजते हैं।

(घ) उपवन के बीच में तालाब है।

(ङ) बालक वृक्षों से फल तोड़ते हैं।

*****

षष्ठः पाठः

लोकोक्तयः

1.	अद्यापि दूरतः सिद्धिः।	अभी दिल्ली दूर है।
2.	आचारः परमः धर्मः।	सदाचार सबसे बड़ा धर्म है।
3.	दूरतः पर्वताः रम्याः।	दूर के ढोल सुहावने।
4.	नयनदूरं मनोदूरम्।	आँख से दूर, मन से दूर।
5.	मतिरेव बलाद् गरीयसी।	अक्ल बड़ी या भैंस।
6.	लोभः पापस्य कारणम्।	लोभ पापों की खान।
7.	शठे शाठ्यं समाचरेत्।	जैसे को तैसा।
8.	शुभस्य शुभम्।	अन्त भले का भला।
9.	संतोषः परमं सुखम्।	संतोष सबसे बड़ा सुख है।
10.	संहतिः कार्यसाधिका।	एकता में बल है।

शब्दार्थः

दूरतः = दूर से

अद्यापि = आज भी

सिद्धिः = सफलता

आचारः = सदाचार

रम्याः = सुहावने

मतिः= बुद्धि

बलाद् = बल से

शठे = दुष्ट के साथ

लोभः = लालच

शाठ्यम् = दुष्टता

समाचरेत् = बर्ताव करो

परमम् = सब से बड़ा

संहति = एकता, संगठन

गरीयसी = बढ़ कर

अभ्यास

प्रश्न 1. कोई पाँच लोकोक्तियाँ कण्ठस्थ करो और उन्हें अर्थ सहित लिखो।

प्रश्न 2. रिक्त स्थान भरो :-

(क) दूरतः .... रम्याः।

(ख) संतोषः परमं.........।

(ग) शठे .... समाचरेत्।

(घ) .... परमः धर्मः

(ड.) नयन-दूरं..........।

प्रश्न 3. हिन्दी में अनुवाद करो :-

(क) अद्यापि दूरतः सिद्धि :।

(ख) मतिरेव बलाद् गरीयसी।

(ग) आचारः परमः धर्मः।

(घ) लोभः पापस्य कारणम्।

(ड.) संतोषः परमं सुखम्।

प्रश्न 4. निम्नलिखित भावों से सम्बन्धित लोकोक्तियाँ लिखो :-

(क) अन्त भले का भला।

(ख) जैसे को तैसा।

(ग) एकता में बल है।

(घ) दूर के ढोल सुहावने।

(ङ) बुद्धि बल से बढ़कर है।

****

सप्तमः पाठः

मम जनकः

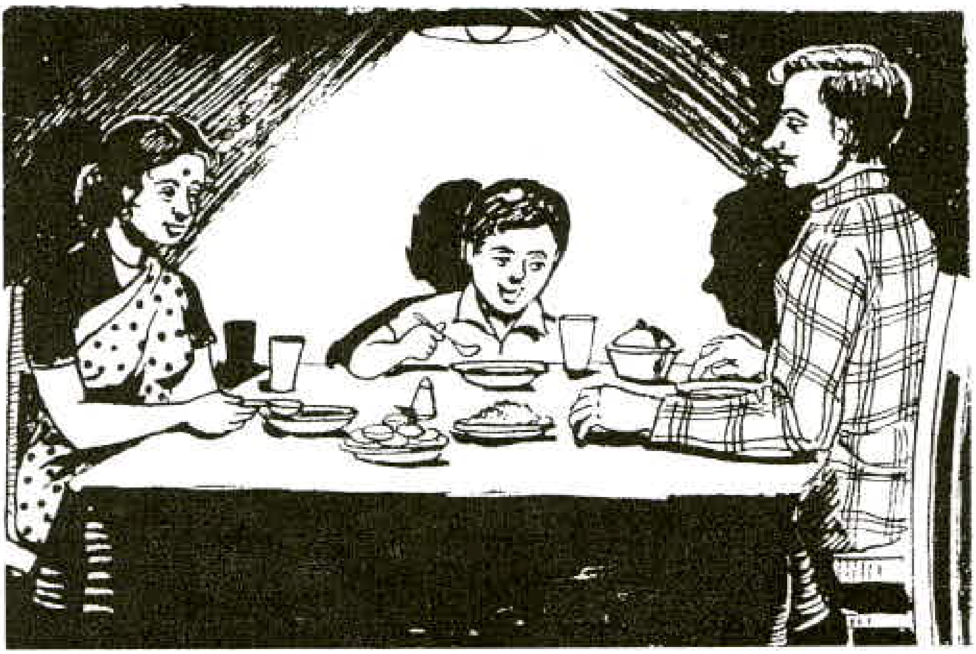

मम जनकः एकः भद्र-पुरुषः अस्ति। सः सदा हितम् मितम् च वदति। सः सुशिक्षितः हृष्ट-पुष्टः च अस्ति। सः विद्यालये संस्कृतस्य अध्यापकः अस्ति।

सः दैनिक जीवने सदा नियमम् पालयति। प्रातः सः शीघ्रम् उत्तिष्ठति, भ्रमणाय च उपवनम् गच्छति। तत्र व्यायामम् करोति। स्नानात् पश्चात् ईश्वरम् पूजयति। ततः सः प्रातराशम् खादति, समये च विद्यालयम् गच्छति। सायंकाले सः निजमित्रैः सह करकन्दुकेन क्रीडयति।

निशायाम् सः माम् अनुजाम् च पाठयति। वयम् काष्ठफलकम् परितः उपविशामः, जनकेन च सह भोजनम् भक्षयामः। सः निज-मधुरालापेन अस्मान् हासयति। ततः वयम् दूरदर्शनम् अपि पश्यामः।

हे ईश ! मम जनकः चिरम् जीवतु।

शब्दार्थ

भद्र-पुरुष: = सज्जन आदमी
परित: = चारों ओर
सुशिक्षित: = अच्छा पढ़ा-लिखा
उपविशाम: = बैठ जाते हैं
कर-कन्दुकेन = वॉलीबाल से
सह = साथ

काष्ठफलकम् = मेज़
मितम् = कम
पाठयति = पढ़ाता है
प्रातराशम् = कलेवा, नाश्ता
मधुरालापेन = मीठी बातचीत से
हासयति = हँसाता है

हितम् = हितकर
अनुजाम् = छोटी बहन को
हृष्ट-पुष्ट: = स्वस्थ
निशायाम् = रात में
निज = अपनी

अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) पिता जी कैसा बोलते हैं ?

(ख) पिता जी क्या काम करते हैं ?

(ग) पिता जी प्रात: काल क्या करते हैं ?

(घ) शाम को पिता जी क्या खेलते हैं ?

प्रश्न 2. 'अस्मद्' शब्द के रूप प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति में लिखो:-

प्रश्न 3. कोष्ठक में दिए गए पदों में से उपयुक्त पद चुनकर रिक्त स्थान भरो:-

(क) स:.....उत्तिष्ठति। (शीघ्रम्, चिरेण, आलस्येन)

(ख) स: सायंकाले......क्रीडति। (कन्दुकेन, करकन्दुकेन, पादकन्दुकेन)

(ग) वयम्..........पश्याम:। (चलचित्रम्, दूरदर्शनम, क्रीडाम्)

प्रश्न 4. रेखांकित पदों में यथानिर्दिष्ट परिवर्तन करो:-

(क) वयम् काष्ठ फलकम् परित: उपविशाम:। (मध्यम पुरुष में)

(ख) स: मितम् वदति। (उत्तम पुरुष में)

(ग) स: नियमम् पालयति। (लोट् लकार में)

(घ) स: विद्यालयम् गच्छति। (लृट् लकार में)

प्रश्न 4. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) वह कम बोलता है।

(ख) पिता जी वॉलीबाल से खेलते हैं।

(ग) हम दूरदर्शन देखते हैं।

(घ) वह समय पर स्कूल जाता है।

****

अष्टमः पाठः

राजमार्गस्य नियमाः

(रमेशः अनुजा रमा च प्रातः विद्यालयम् गच्छतः)

रमा - (राजमार्गम् दृष्ट्वा) भ्रातः ! अत्र वाहनानि पादगाः च आयान्ति, यान्ति च। किम् ते न संघटन्ति?

रमेशः - नैव। ते यातायातस्य नियमान् पालयन्ति।

रमा - यातायातस्य के नियमाः भवन्ति?

रमेशः - पश्य, वाहनानि पादगा च निज-निज-वामतः गच्छन्ति। यथा आवाम् अपि निजवामतः चरणपथे चलावः।

रमा - वाहनम् अपरम् वाहनम् कथम् अतिगच्छति?

रमेशः - यः अग्रे गमनम् इच्छति, सः घंटिकाम् वादयति। .तः सः वाहनस्य दक्षिणतः वेगेन निजवाहनम् नयति।

रमा - भ्रातः ! दीप-स्तम्भे त्रिविध-प्रकाशस्य किम् प्रयोजनम्?

रमेशः - लोहित प्रकाशस्य अर्थः- अग्रे न गच्छत, तिष्ठत च।
पीतप्रकाशस्य अर्थः अस्ति- गमनाय उद्यताः भवत।
हरितप्रकाशस्य अर्थः - गच्छत।

रमा - एतत् तु शोभनम् अस्ति।
(एवम् तौ नियमेन राजमार्गम् लंघयतः सहर्षम् च विद्यालये प्रविशतः)

शब्दार्थ

राजमार्गम् = सड़क को | यान्ति = जाते हैं | दृष्ट्वा = देखकर
संघटन्ति = टकराते हैं | वाहनानि = गाड़ियां | यातायातस्य = आने-जाने के
पादगाः = पैदल चलने वाला | निज-निज-वामतः = अपने अपने बायीं ओर
भ्रातः ! = हे भाई | आयान्ति = आते हैं | चरणपथे = फुटपाथ पर
अतिगच्छति = लांघ जाता है | वेगेन = तेजी से | घंटिकाम् = घंटी को
उद्यताः = तैयार | वादयति = बजाता है
लोहित-प्रकाशस्य = लाल रोशनी का | दक्षिणतः = दायीं ओर से

हरित प्रकाशस्य = हरी रोशनी का
पीत प्रकाशस्य = पीली रोशनी का
शोभनम् = अच्छा
दीप स्तम्भः = प्रकाश वाला खंबा
प्रयोजनम् = मतलब, अर्थ

अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) हमें सड़क पर किस ओर चलना चाहिये ?
(ख) सड़क पर वाहन क्यों टकराते हैं ?
(ग) दूसरे वाहन को किस ओर से लांघना चाहिये ?
(घ) तीन प्रकार की रोशनी का अर्थ बताइये।

प्रश्न 2. क भाग तथा ख भाग को मिलाकर सार्थक वाक्य बनाओ :-

क भाग	ख भाग
लोहित प्रकाशस्य अर्थः	गच्छत।
ते यातायातस्य	निज-निजवामतः गच्छन्ति।
वाहनानि पादगाः च	गमनाय उद्यताः भवत।
पीत प्रकाशस्य अर्थः अस्ति	अग्रे न गच्छतः, तिष्ठत च।
हरित प्रकाशस्य अर्थः	नियमान् पालयन्ति।

प्रश्न 3. रेखांकित पदों में यथानिर्दिष्ट परिवर्तन करो :-

(क) ते न संघटन्ति। (द्विवचन)
(ख) आवाम् चरण पथे चलावः (मध्यम पुरुष)
(ग) यातायातस्य के नियमाः भवन्ति (लोट् लकार)
(घ) तौ राजमार्गम् लंघयतः (उत्तम पुरुष)

प्रश्न 4. कोष्ठक में दी गई धातु के उपयुक्त रूप से रिक्त स्थान भरो :-

(क) वाहनानि पादगाः च निज-निज-वामतः...... । (√गम्)
(ख) यः अग्रे गमनम् .... । (√इष्)
(ग) सः दक्षिणतः वेगेन निज वाहनम्....... । (√नी)

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क) वे नियम का पालन करते हैं।
(ख) वह घंटी बजाता है।
(ग) आगे न जाओ।
(घ) पैदल चलने वाले फुटपाथ पर चलते हैं।

****

नवमः पाठः

सुभाषितानि

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभा मध्ये, हंसमध्ये बको यथा॥१॥
दुर्लभं संस्कृतं वाक्यं, दुर्लभः क्षेमदः सुतः।
दुर्लभा विमला बुद्धिः, दुर्लभः सज्जनः प्रियः॥२॥
वरमेको गुणी पुत्रो, न च मूर्ख-शतान्यपि।
एकः चन्द्रः तमो हन्ति, न हि तारागणोऽपि च॥३॥
गंगा पापं, शशी तापं, दैन्यं कल्प-तरुस्तथा।
पापं, तापं दैन्यं च, घ्नन्ति सन्तो महाशयाः।।४॥
काकः कृष्णः पिकः कृष्णः, को भेद पिककाकयोः।
प्राप्ते तु बसन्ते काले, काकः काकः पिकः पिकः॥५॥

शब्दार्थः

बकः = बगुला
हन्ति = दूर करता है,
विमला = पवित्र, शुद्ध
महाशयाः = उदार पुरुष
शतानि = सैंकड़ों
तमः = अन्धकार
सुतः = पुत्र
घ्नन्ति = नष्ट करते हैं
काकः = कौआ
पिकः = कोयल
क्षेमदः = कल्याणकारी
दैन्यम् = दीनता
वरम् = श्रेष्ठ
कृष्णः = काला

अभ्यास

प्रश्न 1. कोई दो श्लोक कण्ठस्थ करो।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) अंधेरे को कौन दूर करता है ?
(ख) पाप को कौन नष्ट करती है ?
(ग) कौए और कोयल की पहचान कब होती है ?

प्रश्न 3. रिक्त स्थान भरो:-

(क) माता .... पिता .... येन ....न पाठित:।

(ख) काक: .... पिक: .... को .... पिककाकयो:।

(ग) दुर्लभं .... वाक्यं दुर्लभ: .... सुत:।

प्रश्न 4. हिन्दी में अनुवाद करो :-

(क) वरमेको गुणी पुत्रो, न च मूर्खशतान्यपि।
एक चन्द्र: तमो हन्ति, न हि तारागणोऽपि च।।

(ख) माता शत्रु: पिता वैरी, येन बालो न पाठित:।
न शोभते सभामध्ये, हंस मध्ये बको यथा।।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों को उनके अर्थों से मिलाइए :-

क्षेमद:	पुत्र
बक:	अन्धकार
पिक:	बगुला
तम:	कल्याणकारी
सुत:	कोयल

प्रश्न 6. संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क) चन्द्रमा अन्धकार को दूर करता है।

(ख) कोयल काली होती है।

(ग) एक गुणी पुत्र अच्छा है।

(घ) गंगा पाप को हरती है।

*****

दशमः पाठः

श्री गुरु तेग बहादुरः

श्री गुरु तेग बहादुरः सिक्खानाम् नवमः गुरुः आसीत्। सः धर्म-रक्षायै बलिदानम् अकरोत्। श्री गुरोः जन्मस्थानम् अमृतसर-नगरम् आसीत्। श्री गुरोः जनकः श्री हर गोबिन्दः माता च 'माता नानकी' आसीत्।

सः बाल्यकालाद् एव शूरवीर आसीत्। श्री गुरोः पत्नी 'माता गुजरी' आसीत्। श्री गुरोः पुत्रः श्री गुरु गोबिन्द सिंहः आसीत्।

औरंगज़ेब-पीड़िताः काश्मीर-पण्डिताः एकदा श्री गुरोः समीपम् आगच्छत्। ते निजदुःखम् श्री गुरुम् अकथयन्। पण्डितानाम् दुःखेन दुःखितः श्री गुरुः औरंगज़ेबस्य राजसभायाम् दिल्ली नगरम् अगच्छत्। औरंगज़ेबः तम् धर्म-परिवर्तनाय अकथयत्। परम् श्री गुरुः तदादेशम् अस्वीकरोत्, बलिदानाय च तत्परः अभवत्। औरंगज़ेबः दिल्ली-नगरस्य चांदनी-चत्वरे श्री गुरोः प्राणान् अहरत्। तत्र अधुना 'शीशगंज गुरुद्वारः' अस्ति।

सत्यम् हि, श्री गुरुः तेगबहादुरः हिन्दस्य प्रच्छदः अस्ति।

शब्दार्थः

नवमः = नौवां
धर्मरक्षार्थै = धर्म की रक्षा के लिये
बाल्यकालात् = बचपन से
पीड़िताः = दुःखी
तदादेशम् = उसके आदेश को (तद्+आदेशम्)
अस्वीकरोत् = न माना
तत्परः = तैयार
चत्वरे= चौक में
प्राणान् = प्राणों को
अहरत् = हर लिया
तत्र = वहाँ
अधुना = अब
प्रच्छदः = चादर

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) गुरु तेग बहादुर का जन्म कहाँ हुआ था ?

(ख) गुरु तेग बहादुर के माता-पिता का क्या नाम था ?

(ग) गुरु तेग बहादुर ने क्यों बलिदान किया ?

(घ) औरंगजेब ने श्रीगुरु को कहाँ शहीद किया ?

(ङ) शीशगंज गुरुद्वारा कहाँ पर स्थित है ?

प्रश्न 2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से ठीक शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरो:-

(क) गुरु तेग बहादुरः हिन्दस्य .... अस्ति। (आधारः, प्रच्छदः)

(ख) श्री गुरु............. अस्वीकरोत् । (तदादेशम्, तत्कथनम्)

(ग) श्री गुरोः .... अहरत्। (धनानि, प्राणान्)

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों को उनके अर्थ से मिलाइये :-

प्रच्छदः	चौक में
तत्परः	अब
पीडितः	तैयार
चत्वरे	दुःखी
अधुना	चादर

प्रश्न 4. रेखांकित पदों में यथानिर्दिष्ट परिवर्तन करो :-

(क) <u>ते</u> गुरुम् <u>अकथयन्</u>। (एक वचन में)

(ख) <u>पण्डिता:</u> गुरो: समीपम् <u>आगच्छन्</u>। (एक वचन में)

(ग) श्री गुरु: बलिदानाय तत्पर: <u>अभवत्</u>। (लट् लकार)

(घ) श्री गुरो: प्राणान् <u>अहरत्</u>। (लट् लकार)

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो:-

(क) श्री गुरु तेग बहादुर सिक्खों के नौवें गुरु थे।

(ख) वह बचपन से शूरवीर थे।

(ग) श्री गुरु तेगबहादुर ने धर्म की रक्षा के लिए बलिदान किया।

(घ) श्री गुरु का जन्म स्थान अमृतसर था।

****

एकादशः पाठः

अश्वः

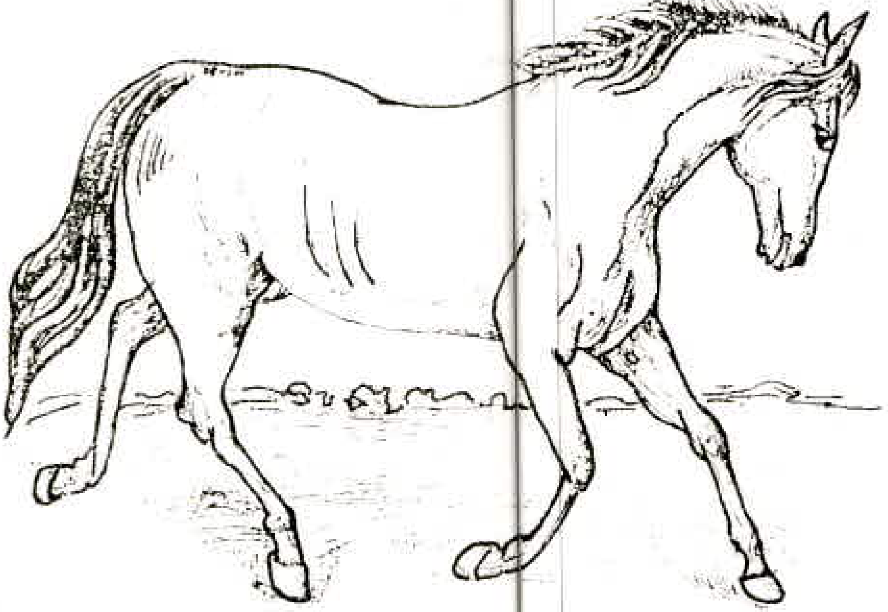

अश्वः एकः चतुष्पदः पशुः अस्ति। अश्वस्य जंघाः दीर्घाः भवन्ति। ग्रीवा अपि दीर्घा भवति। अश्वस्य कर्णौ ह्रस्वौ भवतः। श्वेताः कृष्णाः, कपिशाः, लोहिताः चित्राः च इति नानावर्णाः अश्वाः भवन्ति।

अश्वस्य शरीरम् सबलम् भवति। अश्वः वेगेन चलति। अश्वः जनान् भारम् च वहति। नरः अश्वम् आरोहति रथे च योजयति। सः वल्गया तम् वशम् नयति। प्राचीन काले अश्वः यातायातस्य अपि साधनम् आसीत्। अद्यत्वे अश्वारोहणम् धनिकानाम् एव अभिरुचिः अस्ति।

अश्वाः युद्धे सैनिकानाम् सहायकाः अभवन्। यथा 'चेतकः' महाराणा- प्रतापम् अनेकदा अरक्षत्।

एवम् अश्वः एकः लाभप्रदः पशुः अस्ति।

शब्दार्थः

चतुष्पदः = चार पैरों वाला	चित्राः = रंग-बिरंगे	जंघाः = टांगें
नाना वर्णाः = अनेक रंगों वाले	ग्रीवा = गर्दन	सबलम् = बलवान्
दीर्घा = लंबी	वेगेन = तेजी से	ह्रस्वौ = छोटे
योजयति = जोतता है	श्वेताः = सफेद	वल्गया = लगाम से
कृष्णाः = काले	यातायातस्य = आने-जाने का	कपिशाः = भूरे
अद्यत्वे = आज कल	लोहिताः = लाल	अश्वारोहणम् = घुड़सवारी
अनेकदा = अनेक बार	लाभप्रदः = लाभदायक	अभिरुचिः = शौक, मन बहलाव

अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) घोड़े से मनुष्य क्या काम लेता है ?

(ख) घोड़े को किस से वश में किया जाता है ?

(ग) महाराणा प्रताप के घोड़े का क्या नाम था ?

(घ) आजकल घुड़सवारी किन लोगों का शौक है ?

प्रश्न 2. कोष्ठक में दिए गए धातु को उपयुक्त रूप देकर रिक्त स्थान भरो :-

(क) अश्वाः युद्धे सैनिकानाम् सहायकाः ....(√भू)

(ख) अश्वः जनान् भारम् च ....। (√वह्)

(ग) 'चेतकः' महाराणा प्रतापम् ....। (√रक्ष्)

प्रश्न 3. संस्कृत-पदों को उनके अर्थों से मिलाइये:-

श्वेता :	अनेक बार
कृष्णाः	रंग बिरंगे
कपिशाः	लाल
लोहिताः	काले
चित्राः	भूरे
अनेकदा	सफेद

प्रश्न 4. दिए गए उदाहरण की तरह नीचे लिखी हुई धातुओं के रूप लङ् लकार के मध्यम पुरुष में लिखोः-

√स्था	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
√चुर्	....	....	....
√भू	....	....	....
√कुप्	....	....	....

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करोः-

(क) घोड़ा वेग से चलता है।

(ख) राम घोड़े पर चढ़ता है।

(ग) घोड़ा भार ढोता है।

(घ) घोड़े के कान छोटे होते हैं।

*****

द्वादशः पाठः

अनृत-फलम्

एकः पशुचारकः आसीत्। सः प्रतिदिनं वने भेडाः अचारयत्। एकदा सः उपहासम् अचिन्तयत्। सः वृक्षस्य उपरि आरोहत् उच्चैः च चीत्कारम् अकरोत्....."भो जनाः ! व्याघ्रः, व्याघ्रः, रक्षाम् कुरुत, रक्षाम् कुरुत।

ग्रामस्य जनाः चीत्कारम् श्रुत्वा लगुडान् आदाय वनम् प्रति अधावन्। परम् ते वने कम् अपि व्याघ्रम् न अपश्यत्। ते तम् अपृच्छन्.......कुत्र अस्ति व्याघ्रः ?" सः अवदत् अहसत् च, "अहम् तु उपहसामि, अत्र न कः अपि व्याघ्रः।" खिन्नाः ते गृहान् प्रति अगच्छन्।

एकदा सत्यतः एकः व्याघ्रः आगच्छत्। सः पुनः चीत्कारम् अकरोत्- "व्याघ्रः आगतः, सत्यम् वदामि, व्याघ्रः आगतः।" परम् कः अपि नरः न आगतः।

व्याघ्रः पशुचारकम् अमारयत् भेडाः चापि अखादत्। एवम् अनृतात् सः मृतः॥

शब्दार्थः

अनृतम् = झूठ
लगुडान् = लाठियों को
अचारयत् = चराता था
कम् अपि = किसी को
उपरि = ऊपर
एव = ही
चीत्कारम् = चीख
व्याघ्र = बाघ

श्रुत्वा = सुनकर (√श्रु + क्त्वा)
भेडाः = भेड़ें
आदाय = लेकर (आ+ √दा+ ल्यप्)
उपहासम् = मज़ाक
सत्यतः = सचमुच
उच्चैः = ऊँची-ऊँची
एवम् = इस प्रकार
मृतः = मर गया

पशुचारकः = चरवाहा
परम् = परन्तु
एकदा = एक दिन
खिन्नः = दुःखी
आरोहत् = चढ़ गया
आगतः = आ गया (आ + √गम् + क्त)

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) चरवाहा भेड़ें चराने कहाँ जाता था ?

(ख) उसने लोगों के साथ क्या मज़ाक किया ?

(ग) चरवाहे को झूठ बोलने का क्या फल मिला ?

(घ) कथा का सार अपने शब्दों में लिखो।

प्रश्न 2. कथा से मिलने वाली शिक्षा पर √ का चिन्ह लगाओ :-

(क) झूठ का फल मीठा होता है।

(ख) सदा सत्य बोलना चाहिए।

(ग) असत्य बोलने से मनुष्य सुखी रहता है।

प्रश्न 3. तालिका में दिये गये शब्दों से सार्थक वाक्य बनाओ :-

एकः	उपहासम्	आसीत्।
सः	भेडाः	अचिन्तयत्।
व्याघ्रः	पशुचारकः	अखादत्।

प्रश्न 4. √ प्रच्छ् धातु के लङ् लकार में रूप लिखो :-

प्रश्न 5. रिक्त स्थान भरो :-

(व्याघ्र:, उपरि, पशुचारकं, भेडा:)

(क) स: प्रतिदिनं वने .... अचारयत्।

(ख) स: वृक्षस्य.....आरोहत्।

(ग) एकदा सत्यत: एव......आगच्छत्।

(घ) व्याघ्र:........अमारयत्।

प्रश्न 6. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) एक चरवाहा था।

(ख) मैं तो मज़ाक करता हूँ।

(ग) एक दिन सचमुच बाघ आ गया।

(घ) मैं सत्य बोलता हूँ।

*****

त्रयोदशः पाठः

होलिका

भारतवर्षः उत्सवानाम् देशः अस्ति। होलिका भारतीयानाम् प्रसिद्धः रंगाणाम् उत्सवः अस्ति।

होलिकायाः विषये एका कथा प्रसिद्धा अस्ति। हिरण्यकशिपुः दानवानाम् राजा आसीत्। सः ईश्वर-भक्तान् दुःखी करोति स्म। हिरण्यकशिपोः पुत्रः प्रह्लादः ईश्वर-भक्तः आसीत्। हिरण्यकशिपुः तम् अकथयत्- "त्यज ईश्वर-पूजाम्, अन्यथा मारयिष्यामि।" परम् प्रह्लादः ईश्वर-पूजाम् न अत्यजत्।

नृपस्य भगिनी होलिकायाः पार्श्वे वरदानम् आसीत्- "यत् सा पावके न ज्वलिष्यति।" अतः हिरण्यकशिपोः आदेशात् होलिका प्रह्लादम् अंके अधारयत् पावके च उपविशत्। परम् ईश्वरः प्रह्लादम् अरक्षत्, होलिकाम् च अदहत्। एवम् ईश्वर-भक्तस्य विजयः अभवत्। तदारभ्य जनाः प्रतिवर्षम् फाल्गुनमासे होलिकाम् मानयन्ति।

जनाः परस्परम् रंगैः क्रीडन्ति। बालाः युवकाः च नृत्यन्ति। ते रेचनयन्त्रेण परस्परम् रंगम् क्षिपन्ति। सर्वत्र हर्षस्य वातावरणम् भवति। सर्वे परस्परम् स्नेहेन मिलन्ति।

सत्यमेव, होलिका स्नेहस्य उत्सवः अस्ति।

शब्दार्थ

होलिका = होली
आदेशात् = आज्ञा से
दानवानाम् = राक्षसों का
अंके = गोद में
त्यज =छोड़ दो
अधारयत् = ले लिया, धारण किया
अन्यथा = नहीं तो
अदहत् = जला दिया
भगिनी = बहन
तदारभ्य = तब से लेकर (तदा + आरभ्य)
पार्श्वे = पास
पावके = आग में
रेचनयन्त्रेण = पिचकारी से
ज्वलिष्यति = जलेगी
सर्वत्र = सब जगह पर

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(क) प्रह्लाद के पिता का क्या नाम था ?

(ख) होलिका को क्या वरदान मिला हुआ था ?

(ग) होली क्यों मनाई जाती है ?

(घ) होली कब मनाई जाती है ?

(ड.) लोग होली कैसे मनाते हैं ?

प्रश्न 2. √क्षिप् धातु के लोट् लकार में रूप लिखो :-

प्रश्न 3. कोष्ठक में से ठीक शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरो :-

(क) होलिका.........उत्सवः अस्ति। (धैर्यस्य, स्नेहस्य)

(ख) बालाः युवकाः च........। (लिखन्ति, नृत्यन्ति)

(ग) हिरण्यकशिपुः..............राजा आसीत्। (दानवानाम्, मानवानाम्)

प्रश्न 4. नीचे दिये गए एकवचन के साथ उसका सामने दिया गया बहुवचन मिलाइये:-

अस्ति	मानयन्ति
रक्षति	कथयन्ति
कथयति	भवन्ति
भवति	रक्षन्ति
मानयति	सन्ति

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो —

(क) होली रंगों का उत्सव है।

(ख) प्रह्लाद ईश्वर-भक्त था।

(ग) सत्य की जीत हुई।

(घ) बालक नाचते हैं।

****

चतुर्दशः पाठः

चण्डीगढ़ः

चण्डीगढ़ः भारतस्य प्रसिद्धम् सुन्दरम् च नगरम् अस्ति। एतत् नगरम् नव प्रकारस्य नगरम् अस्ति।

एतत् नगरम् पंचापस्य हरियाणा-प्रदेशस्य च राजधानी अस्ति। चण्डीगढ़स्य प्रत्येके सैक्टरे विद्यालयः डाकगृहम्, औषधालयः, आपणः, क्रीडाक्षेत्रम् च अस्ति। अत्र एव प्रसिद्धः औषधालयः, 'पी.जी.आई' अपि अस्ति। पंजाब-विश्वविद्यालयः अपि चण्डीगढ़स्य शोभा अस्ति।

चण्डीगढ़नगरे 'रॉक गार्डन', रोजगार्डन, सुखना सरसी, जन्तुशाला च दर्शनीयानि स्थानानि सन्ति। अत्र उच्चन्यायालयः सचिवालयः च अपि स्तः।

चण्डीगढ़स्य राजमार्गाः विशालाः सन्ति। राजमार्गन् अभितः रम्याः वृक्षाः सन्ति। सर्वत्र स्वच्छता एव स्वच्छता अस्ति। चण्डीगढ़स्य वातावरणस्य अपि शुद्धम् निर्मलम् च अस्ति।

अतः प्रदूषणरहितम् एतत् नगरम् सर्वेभ्यः रुचिकरम् अस्ति।

शब्दार्थ

नवप्रकारस्य = नए प्रकार का	सरसी = झील	डाक गृहम् = डाकघर
उच्चन्यायालयः = हाईकोर्ट	औषधालयः = अस्पताल	राजमार्गाः = सड़कें
आपणः = बाज़ार	अभितः = दोनों ओर	जन्तुशाला = चिड़ियाघर
स्वच्छता = सफाई	रम्याः = सुन्दर	रुचिकरम् = मनपसन्द

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में लिखो :-

(क) चण्डीगढ़ में दर्शनीय स्थान कौन-कौन से हैं ?

(ख) चण्डीगढ़ की सड़कें कैसी हैं ?

(ग) चण्डीगढ़ किन-किन प्रदेशों की राजधानी है ?

प्रश्न 2. नीचे दिए गए शब्दों को उनके ठीक अर्थों से मिलाइए :-

जन्तुशाला	बाज़ार
डाकगृहम्	सड़क
राजमार्गः	दोनों ओर
अभितः	चिड़ियाघर
आपणः	डाकघर

प्रश्न 3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से ठीक शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरो-

(क) एतत् नगरम् नवप्रकारस्य.............. अस्ति। (नगरम्/ग्रामम्)

(ख) चण्डीगढ़स्य राजमार्गाः........... सन्ति। (बहुविधाः/विशालाः)

(ग) सर्वत्र स्वच्छता एव.......... अस्ति। (स्वच्छता/अस्वच्छता)

प्रश्न 4. एतद् (पुं.) के रूप प्रथमा एवं द्वितीया विभक्तियों में लिखो।

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो।

(क) चण्डीगढ़ भारत का प्रसिद्ध नगर है।

(ख) यह नगर पंजाब की राजधानी है।

(ग) चण्डीगढ़ की सड़कें विशाल हैं।

(घ) चण्डीगढ़ का वातावरण निर्मल है।

****

पंचदश: पाठ:

विद्या-गौरवम्

एकदा एक: बालक: निजगृहे चिन्तयति स्म। जननी तम् अपृच्छत्- 'पुत्र! किम् चिन्तयसि ? किमर्थम् तव मुखकमलम् म्लानम् ?''

पुत्र: अकथयत्......''मात:! कथम् अहम् धनिक: भवानि, इति चिन्तयामि। यत: सर्वत्र धनिकानाम् एव आदर: भवति। ते एव विविधानि सुखानि अनुभवन्ति।''

माता तम् स्नेहेन अपृच्छत्......''पुत्र! धनवान् क: भवति ? बालक: अवदत् - ''धन-धान्यसम्पन्न: एव धनवान् भवति।'' जननी अवदत्- ''सत्यम् एतत्, परम् बाल्यकाले न क: अपि धनम् अर्जति।''

बालक: पुन: अपृच्छत्---''किम् न अस्ति क: अपि उपाय:, येन अहम् धनिक: भवानि ?'' माता अवदत्- ''केवलम् रूप्यकाणि एव धनम् न भवति। एतत् धनम् तु चौर: चोरयति। केवलम् विद्याधनम् एव श्रेष्ठम् धनम् अस्ति। तत् चौर: अपि न हरति। अत: पुत्र! विद्याधनम् अर्ज।'' एतत् श्रुत्वा बालक: अहृष्यत्; पठनाय च तत्पर: अभवत्।

शब्दार्थ:

विद्या- गौरवम् = विद्या की महानता
मुख कमलम् = मुख रूपी कमल
म्लानम् = मुरझाया हुआ
किमर्थम् = क्यों
धनिक: = धनी
अनुभवन्ति = अनुभव करते हैं
धनधान्य सम्पन्न: = धन और अनाज से भरपूर
बाल्यकाले = बचपन में
यत: = क्योंकि
अर्ज = कमाओ
हरति = चुराता है
विद्या-धनम् = विद्या रूपी धन
तत्पर: = तैयार
भवानि = बन जाऊँ
पठनाय = पढ़ने के लिये
अहृष्यत् = खुश हो गया
तव = तुम्हारा
एव = ही

अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो:-

(क) बालक क्या बनना चाहता था?

(ख) माता ने धनवान् बनने का कौन सा उपाय बताया?

(ग) उत्तम धन कौन-सा है?

(घ) कथा का सार अपने शब्दों में लिखो।

प्रश्न 2. कोष्ठक में से उचित पद चुनकर रिक्त स्थान भरो :-

(क) कथम्..........धनिकः भवानि। (सः, त्वम्, अहम्)

(ख) माता तम्.......अपृच्छत्। (उत्साहेन, स्नेहेन)

(ग) चौरः........न हरति। (धनम्, विद्या-धनम्)

प्रश्न 3. रेखांकित पदों में यथानिर्दिष्ट परिवर्तन करो:-

(क) अहम् धनिकः भवानि। (लृट् लकार)

(ख) त्वम् किम् चिन्तयसि? (लङ् लकार)

(ग) धन-धान्य सम्पन्नः एव धनवान् भवति। (लोट् लकार)

प्रश्न 4. एतत् (पुं.) के तृतीया एवं चतुर्थी विभक्तियों में रूप लिखो।

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो:-

(क) चोर धन चुराता है।

(ख) वह धन कमाता है।

(ग) विद्या धन श्रेष्ठ धन है।

(घ) तू क्या सोचता है?

****

षोडशः पाठः

वसन्त-ऋतुः

भारतम् ऋतुप्रधानः देशः अस्ति। वसन्तः, ग्रीष्मः वर्षाः, शरद्, हेमन्तः शिशिरः च इति षट् ऋतवः भवन्ति। परम् सर्वश्रेष्ठः ऋतुः वसन्तः एव अस्ति।

चैत्रे वैशाखे च वसन्तस्य आगमनम् भवति। वसन्ते प्रकृतिः सर्वत्र नवम् रूपम् धारयति। नवांकुराः प्ररोहन्ति, वृक्षेषु नवानि पल्लवानि प्रस्फुटन्ति। पीताः सर्षप-पादपाः चित्तम् मोहयन्ति। एवम् क्षेत्राणाम् शोभा दर्शनीया भवति।

आम्रवृक्षेषु कोकिलाः मधुरम् कूजन्ति। कोकिलस्य कूजनेन उद्यानानाम् वातावरणम् संगीतमयम् भवति। विविधानि पुष्पाणि विकसन्ति। पुष्पाणाम् सुगन्धः मनः हरति। एवम् सर्वत्र वसन्तस्य साम्राज्यम् भवति।

सत्यम् एव वसन्तः "ऋतुराजः" अस्ति।

शब्दार्थ

नवांकुराः = नई कोंपलें
प्ररोहन्ति = उगते हैं
पल्लवानि = पत्ते
प्रस्फुटन्ति= फूटते हैं
पीताः = पीले
सर्षप -पादपाः =सरसों के पौधे
विकसन्ति = खिलते हैं
मोहयन्ति = मुग्ध करते हैं
एवम् = इस प्रकार
कूजनेन = कुहू-कुहू से
परम् = परन्तु
नवम् = नया
दर्शनीया = देखने योग्य
विविधानि = अनेक प्रकार के

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों का हिन्दी में उत्तर लिखो—

(क) छः ऋतुओं के नाम बताइये।

(ख) वसन्त ऋतु को 'ऋतुराज' क्यों कहते हैं ?

(ग) वसन्त का आगमन किस महीने में होता है ?

(घ) बागों का वातावरण किस कारण संगीतमय बन जाता है ?

प्रश्न 2. रेखांकित पदों में यथानिर्दिष्ठ परिवर्तन करो:-

(क) कोकिला: मधुरम् कूजन्ति । (एकवचन)

(ख) पादपा: चित्तम् मोहयन्ति। (द्विवचन)

(ग) नवांकुर: प्ररोहति (बहुवचन)

प्रश्न 3. कोष्ठक में दिए गए पदों में से उपयुक्त पद चुन कर रिक्त स्थान भरो:-

(क) वृक्षेषु .... प्रस्फुटन्ति। (फलानि, पल्लवानि)

(ख) प्रकृतिः नवम् .... धारयति। (वस्त्रम्, रूपम्)

(ग) क्षेत्राणाम् .... दर्शनीया भवति। (शोभा, पादपा:)

प्रश्न 4. तालिका में से सार्थक वाक्य बनाइये :-

वसन्तस्य	आगमनम्	विकसन्ति।
विविधानि	पुष्पाणि	भवति।
कोकिला:	मधुरम्	प्रस्फुटन्ति।
वृक्षेषु	पल्लवानि	कूजन्ति।

प्रश्न 6. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) वृक्षों पर कोयलें कूजती हैं।

(ख) भारत ऋतुप्रधान देश है।

(ग) वसन्त को ऋतुराज कहते हैं।

(घ) सुगन्ध मन को हरती है।

****

सप्तदशः पाठः

सुभाषितानि

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥१॥

नरस्याभरणं रूपं, रूपस्याभरणं गुणः।
गुणस्याभरणं ज्ञानं, ज्ञानस्याभरणं क्षमा ॥२॥

मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति सः पण्डितः ॥३॥

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिः भवेत्।
एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति ॥४॥

हस्तस्य भूषणं दानं, सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं, भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥५॥

शब्दार्थ

अयम् = यह	परदारेषु = पराई स्त्रियों में	निजः = अपना
परद्रव्येषु = पराये धनों में	परः = पराया	लोष्ठवत् =मिट्टी के ढेले की तर
वेति = अथवा, या (वा+इति)	आत्मवत् = अपनी तरह	गणना = गिनती
सर्वभूतेषु = सभी प्राणियों में	लघुचेतसाम्=छोटे दिल वालों का	पण्डितः= विद्वान्
उदारचरितानाम् = विशाल चरित्र वालों का		गति = वेग, गति, च
वसुधैव = पृथ्वी ही	पुरुषकारेण = परिश्रम से	कुटुम्बकम् = परिवा
दैवम् = भाग्य	आभरणम् = गहना, आभूषण	चक्रेण = पहिये से
मातृवत् = माता की तरह	रथस्य =रथ की	भूषणम् = गहना
श्रोत्रस्य = कान का	कण्ठस्य = गले का	प्रयोजनम् = लाभ

अभ्यास

श्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) विशाल हृदय वाले मनुष्य पृथ्वी को क्या समझते हैं ?

(ख) विद्वान् किसे कहते हैं ?

(ग) ज्ञान का आभूषण क्या है ?

(घ) भाग्य को कैसे सिद्ध किया जाता है ?

(ङ) गले का गहना किसे कहते हैं ?

श्न 2. रिक्त स्थान भरो :-

(क) मातृवत् .... परद्रव्येषु ....।
.... सर्वभूतेषु यः पश्यति सः .... ॥

(ख) अयं निजः .... वेति............. लघुचेतसाम्।
.......चरितानां तु ....कुटुम्बकम्॥

श्न 3. हिन्दी में अनुवाद करो :-

(क) यथा त्वेकेन चक्रेण न रथस्य गतिः भवेत्।
एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति॥

(ख) हस्तस्य भूषणं दानं, सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं, भूषणैः किं प्रयोजनम्॥

श्न 4. निम्नलिखित शब्दों को उनके ठीक अर्थ से मिलाइये :-

पण्डितः	परिवार
निजः	गहना
दैवम्	अपना
आभरणम्	भाग्य
कुटुम्बकम्	विद्वान्

न 5. संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क) हाथ का गहना दान है।

(ख) नर का आभूषण रूप है।

(ग) आभूषणों से क्या लाभ ?

(घ) कण्ठ का गहना सत्य है।

****

अष्टादशः पाठः

वैशाखी-मेलकः

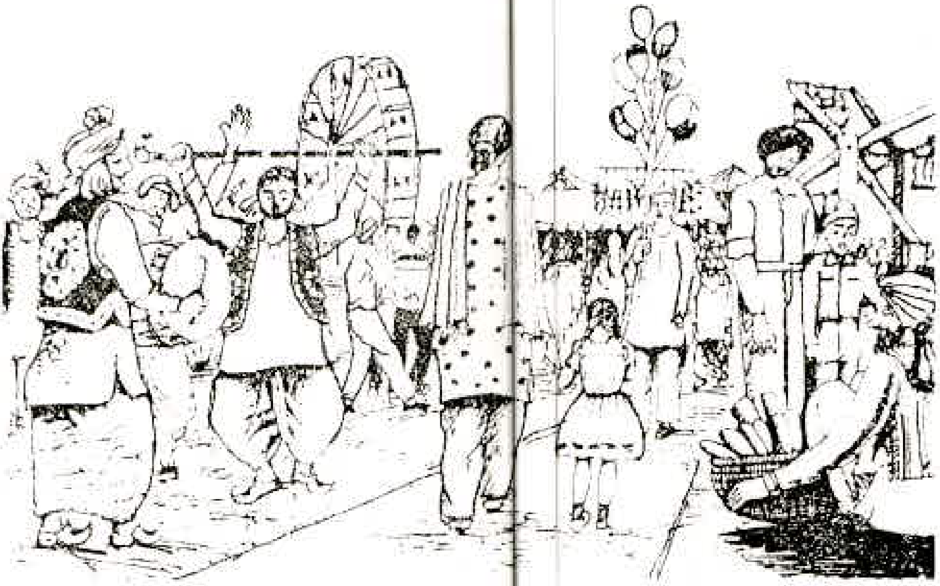

पंचापः मेलकानाम् भूमिः अस्ति। वैशाखी-मेलकः पंचापस्य प्रख्यातः मेलकः अस्ति। क्षेत्रेषु गोधूमः पाकम् व्रजति। कृषकाः हर्षेण एतम् मेलकम् वैशाखस्य प्रथम दिवसे मानयन्ति।

एषः मेलकः विशालक्षेत्रे भवति। तत्र आपणिकाः स्व आपणान् सज्जी-कुर्वन्ति। आपणेषु मिष्टान्नानि क्रीडनकानि च मिलन्ति। बालाः युवकाः वृद्धाः च नवीनानि वस्त्राणि धारयन्ति।

नवयुवकाः 'भंगड़ा' इति नृत्यम् नृत्यन्ति। जनाः मेलके मोदकानि जलेबिकाः खादन्ति। सायंकाले मेलकः सम्पूर्णः भवति।

वैशाखी-दिने श्री गुरु गोबिन्द सिंहः'खालसा-पन्थम्' अस्थापयत्। वैशाख दिवसात् एव नववर्षस्य प्रारम्भः अपि भवति। अतः एव आपणिकाः एतम् दिवस शुभम् कथयन्ति।

सत्यम्, वैशाखी-मेलकः पंचापस्य प्रसिद्धः मेलकः अस्ति।

शब्दार्थ

मेलकः = मेला
मोदकानि = लड्डुओं को
पंचापः = पंजाब
जलेबिकाः = जलेबियां
प्रख्यातः = प्रसिद्ध
अस्थापयत् = स्थापना की
गोधूमः = गेहूँ, कनक
पाकम् व्रजति = पक जाता है
आपणिकाः = दुकानदार
आपणान् = दुकानों को, बाज़ारों को
क्रीडनकानि = खिलौने

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखो :-

(क) वैशाखी का मेला कब मनाया जाता है ?

(ख) वैशाखी का मेला क्यों मनाया जाता है ?

(ग) मेले में क्या-क्या होता है ?

प्रश्न 2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरो :-

(क) पंचापः............... भूमिः अस्ति। (मेलकानाम्/जनानाम्)

(ख) क्षेत्रेषु .... पाकम् व्रजति। (अन्नम्/गोधूमः)

(ग) सायंकाले मेलकः..........भवति। (प्रारम्भः/सम्पूर्णः)

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों को उनके बहुवचन में मिलाइए :-

अस्ति	क्रीडनकानि
मानयति	वस्त्राणि
नृत्यति	मानयन्ति
वस्त्रम्	नृत्यन्ति
क्रीडनकम्	सन्ति

प्रश्न 4. तालिका में दिए शब्दों से सार्थक वाक्य बनाइए :-

पंचापः	मेलकानाम्	विशाल क्षेत्रे	भवति।
एषः	मेलकः	सम्पूर्णः	भवति।
सायंकाले	मेलकः	भूमिः	अस्ति।

प्रश्न 5. अस्मद् तथा युष्मद् शब्दों के प्रथम चार विभक्तियों में रूप लिखो।

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क) पंजाब मेलों की धरती है।

(ख) वैशाखी पंजाब का प्रसिद्ध मेला है।

(ग) नवयुवक नाचते हैं।

(घ) लोग लड्डू खाते हैं।

*****

नवदशः पाठः

वृषभ-मशकयोः कथा

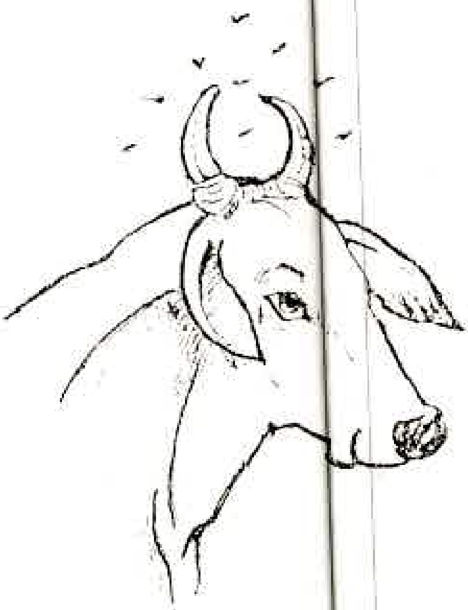

नवग्रामे एकः वृषभः आसीत्। सः यथेच्छम् अभ्रमत् तृणानि च अभक्षयत्। सः महाकायः अभवत्। वृषभस्य शरीरम् श्वेतम् शृंगौ च कृष्णौ आस्ताम्।

एकदा प्रातः काले सः वने अभ्रमत्। पवनः सलीलम् अवहत्। तत्र मशकाः अपि इतस्ततः उत्पतन्ति स्म। एकः मशकः वृषभस्य शृंगम् आरोहत्। वृषभः मन्दम्-मन्दम् अचलत्। मशकः अचिन्तयत्---"एष मम भारेण पीडितः अस्ति। अत एव शीघ्रम् न चलति।" मशकः तम् अपृच्छत्-"भो वृषभ! किम् मम भारेण पीडितः असि?"

इति श्रुत्वा वृषभः अहसत् अवदत् च, "न अहम् तव भारम् गणयामि। त्वम् यथाशक्ति कूर्दनम् उत्प्लवनम् वा कुरु। यदि इच्छसिः तर्हि निजपरिवारम् अपि आनय।" मशकः एतत् श्रुत्वा लज्जया अधावत्।

सत्यम् एव कथयन्ति जनाः- 'क्षुद्रः स्वल्पम् अपि स्वम् बहु गणयति।'

शब्दार्थ

वृषभः = बैल   इतस्ततः = इधर-उधर   यथेच्छम् = इच्छा अनुसार

पीडितः = दुःखी
श्रृंगौ = दोनों सींग
क्षुद्रः = तुच्छ
मशकाः = मच्छर (बहु.)
बहु गणयति = बड़ा मानता है
महाकायः = बड़े शरीर वाला
श्रुत्वा = सुनकर (√श्रु + क्त्वा)
सलीलम् = धीरे-धीरे
उत्प्लवनम् = उछलना
उत्पतन्ति स्म = उड़ रहे थे
कृष्णौ = काले
कूर्दनम् = कूदना
स्वम् = अपने को

अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) बैल का शरीर कैसा था ?

(ख) मच्छर ने बैल से क्या पूछा ?

(ग) मच्छर लज्जित होकर क्यों भागा ?

(घ) कथा का सार अपने शब्दों में लिखो।

(ङ) कथा से क्या शिक्षा मिलती है ?

प्रश्न 2. रेखांकित पद के स्थान पर कोष्ठक में दिया गया पद रख कर उचित संशोधन करोः-

(क) वृषभस्य कायः श्वेतः आसीत्। (शरीरम्)

(ख) नवग्रामे एकः वृषभः आसीत्। (कन्या)

(ग) एषः मम भारेण पीडितः अस्ति। (एषा)

प्रश्न 3. कोष्ठक में दिए गए पदों में से उपयुक्त पद चुन कर रिक्त स्थान भरोः-

(लज्जया, भारम्, मन्दम्-मन्दम्)

(क) न अहम् तव............गणयामि।

(ख) वृषभः ....अचलत्।

(ग) मशकः एतत् श्रुत्वा.........अधावत्।

प्रश्न 4. √भक्ष् के लङ् लकार में रूप लिखोः-

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) बैल धीरे-धीरे चल रहा था।

(ख) बैल का शरीर सफेद था।

(ग) हवा धीरे-धीरे चलती है।

(घ) मच्छर इधर-उधर उड़ रहे थे।

****

विंशः पाठः

दानवीर-कर्णः

भारतभूमिः वीरभूमिः अस्ति। अत्र समये-समये धर्मवीराः, कर्मवीराः, युद्धवीराः, दानवीराः, च अभवन्। ते स्व-स्व क्षेत्रे आदर्शभूताः आसन्। कर्णः एकः प्रख्यातः दानवीरः अद्वितीयः योधः च आसीत्।

सः सूर्यस्य पुत्रः आसीत्। परम् तम् सूत-पुत्रम् अपि कथयन्ति। सूर्यस्य आशीर्वादात् जन्मतः एव कर्णस्य शरीरे कवचम् कुण्डले च आसन्।

ऋषिः दुर्वासाः कर्णस्य गुरुः आसीत्। दुर्योधनः कर्णस्य परमम् मित्रम् आसीत्। अतः सः तम् अंगदेशस्य नृपम् अकरोत्। कर्णः अपि युद्धे निज-मित्रस्य साहाय्यम् अकरोत्। अर्जुनः तम् युद्धे अमारयत्।

कर्णः महान् दानी आसीत्। दानवीर-कर्णस्य गृहात् कः अपि याचक रिक्त-हस्तः न अगच्छत्। एकदा श्रीकृष्णः ब्राह्मणवेशे कर्णस्य समीपम् आगच्छत् अयाचत् च,......''भो कर्ण! कवचम् कुण्डले च मह्यम् यच्छ।'' कर्णः सहर्षम् श्रीकृष्णाय सर्वम् अयच्छत्। श्रीकृष्णः कर्णस्य उदारतया अतीव अहृष्यत्।

धन्य सः दानवीरः कर्णः।

शब्दार्थ

आदर्शभूतः = आदर्श बने हुए
प्रख्यातः = प्रसिद्ध
अद्वितीय = जिसके समान कोई दूसरा न हो
कवचम् = लोहे का वस्त्र
जन्मतः = जन्म से
एव = ही
याचकः = भिक्षुक
अयाचत् = **माँगा**
अतीव = बहुत
सहर्षम् = खुशी-खुशी
सर्वम् = सब कुछ
उदारतया = खुलदिली से
अहृष्यत् = प्रसन्न हुआ

अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखोः-

(क) कर्ण को किसके आशीर्वाद से कवच और कुण्डल मिले थे?

(ख) कर्ण का गुरु कौन था?

(ग) कर्ण ने युद्ध में किसकी सहायता की ?

(घ) कर्ण युद्ध में किसके हाथों मारा गया ?

(ङ) श्रीकृष्ण ने कर्ण से क्या मांगा ?

प्रश्न 2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरो :-

(क) भारत भूमि............. अस्ति । (श्रेष्ठ भूमिः, वीरभूमिः)

(ख) श्रीकृष्णः...........आगच्छत्। (ब्राह्मणवेशे, बालवेशे)

(ग) दुर्योधनः कर्णस्य.......आसीत् (शत्रु, मित्रम्)

प्रश्न 3. नीचे लिखे पदों को उचित क्रम देकर सही वाक्य बनाएँ :-

(क) आसीत् पुत्रः सः सूर्यस्य।

(ख) आसीत् महान् कर्णः दानी।

(ग) कवचम् यच्छ कुण्डले मह्यम् च।

प्रश्न 4. रेखांकित पदों में यथानिर्दिष्ट परिवर्तन करोः-

(क) धर्मवीराः कर्मवीराः अभवन्। (एक वचन)

(ख) कर्णः श्रीकृष्णाय सर्वम् अयच्छत्। (लोट् लकार)

(ग) श्रीकृष्णः कर्णस्य समीपम् आगच्छत् । (लट् लकार)

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) कर्ण दानवीर था।

(ख) कर्ण दुर्योधन का मित्र था।

(ग) दुर्वासा कर्ण का गुरु था।

(घ) कर्ण सूर्य का पुत्र था।

****

एकविंशः पाठः

स्वच्छता

सर्वे सौन्दर्यम् अभिलषन्ति। स्वच्छता सौन्दर्यम् वर्धयति। स्वच्छता मानवस्य शरीरम् भूषयति। अतः एव एषा मानवस्य भूषणम् अस्ति।

भोः बालकाः! भक्षणात् पूर्वम् हस्तौ प्रक्षालयत। सदा स्वच्छ-पात्रेषु भोजनम् भक्षयत। सदा स्वच्छानि वस्त्राणि धारयत। विमल नख-केशाः बालकस्य सौन्दर्यम् वर्धयन्ति। स्वच्छम् शरीरम् स्वस्थम् नीरोगम् च भवति। स्वस्थे शरीरे एव स्वस्थम् मनः तिष्ठति। स्वस्थः बालकः पठने लेखने च प्रवीणः भवति।

यः बालकः स्वच्छताम् न धारयति, सः सदा निजकार्ये मन्दः अलसः च भवति। रोगाः तम् शीघ्रम् आक्रामन्ति।

भो बालकाः! सदा स्वच्छाः भवत।

शब्दार्थ

स्वच्छता = सफाई
सौन्दर्यम् = सुन्दरता
भूषयति = सजाती है
भक्षणात् = खाने से
पूर्वम् = पहले
धारयत = पहनो
स्वस्थम् = तन्दरुस्त
नीरोगम् = रोग रहित
विमल नख केशाः = साफ नाखून और केश
मन्दः = ढीला
अलसः = आलसी
आक्रामन्ति = हमला कर देते हैं, घेर लेते हैं
प्रक्षालयत = धोवो
निजकार्ये = अपने काम में
स्वच्छ -पात्रेषु = साफ बर्तनों में
भूषणम् = गहना
प्रवीणः = होशियार

अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) मानव का गहना क्या है ?

(ख) स्वच्छता के लाभ बताओ।

(ग) रोग किस बालक को घेर लेते हैं ?

प्रश्न 2. यथानिर्दिष्ट परिवर्तन करो :-

(क) भो बालकाः ! स्वच्छम् भोजनम् भक्षयत। (लृट् लकार)

(ख) सः हस्तौ प्रक्षालयति। (लोट् लकार)

(ग) बालकाः स्वच्छताम् धारयन्ति। (एक वचन)

(घ) रोगः तम् आक्रामति (बहुवचन)

प्रश 3. रेखांकित पद के स्थान पर कोष्ठक में दिया गया शब्द रख कर उचित परिवर्तन करो:-

(क) स्वच्छता महत्वपूर्णा अस्ति। (भोजनम्)

(ख) बालकः अलसः भवति। (बालिका)

(ग) बालिका प्रवीणा अस्ति। (बालकः)

प्रश्न 4. कोष्ठक में दिए गए पदों में से उपयुक्त पद चुनकर रिक्त स्थान भरो:-

(क) स्वच्छता......वर्धयति। (सौन्दर्यम्, गौरवम्)

(ख) अस्वच्छः बालकः निजकार्ये......भवति। (कुशलः, अलसः)

(ग) भो बालकाः ! सदा.....भवत। (स्वच्छाः, मलिनाः)

प्रश्न 4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) सफाई सुन्दरता बढ़ाती है।

(ख) साफ बर्तनों में भोजन करो।

(ग) सदा स्वच्छ रहो।

(घ) वह बालक पढ़ने में प्रवीण है।

****

द्वाविंशः पाठः

पर्यावरणम्

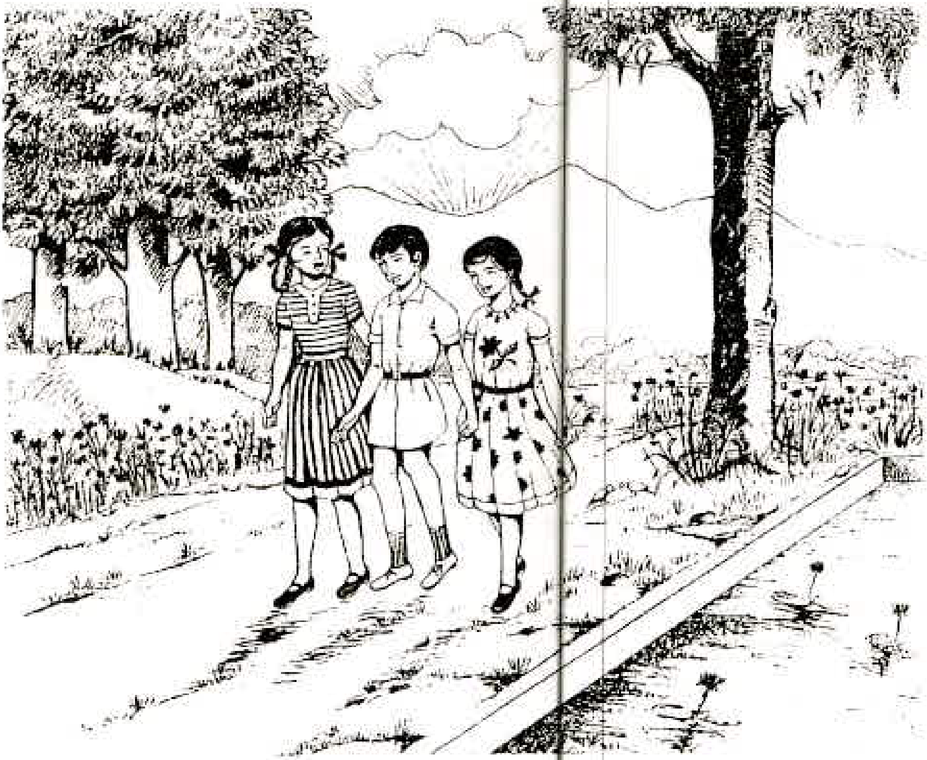

जलादयः पदार्थाः पर्यावरणम् रचयन्ति। पदार्थाः एव जीवानाम् पादपानाम् च उपकारकाः सन्ति। जीवाः वसुधायाम् निवसन्ति वसुधायाः च पदार्थान् खादन्ति। जलम् जीवानाम् जीवनम् अस्ति। जीवाः वायुम् विना न जीवन्ति। सूर्यः जीवेभ्यः प्रकाशम् यच्छति।

पादपाः पर्यावरणम् शोधयन्ति परिवेशम् च भूषयन्ति। पादपैः एव पर्वताः रम्याः स्वास्थ्यवर्धकाः च भवन्ति। वनेषु वन्याः जीवाः वसन्ति। पादपैः जीवाः जीवन्ति।

मानवः निजलाभाय पादपान् नाशयति। पादपानाम् विनाशेन पर्यावरणम् विकृतम् भवति। विकृतम् पर्यावरणम् रोगान् जनयति। एवम् रक्षक-पर्यावरणम् भक्षकम् भवति।

मानवाय स्वच्छ पर्यावरणस्य अतीव आवश्यकता अस्ति। अत एव वन-विभागः पर्यावरण-संरक्षणाय प्रतिवर्षम् वनमहोत्सवम् मानयति।

अतः पर्यावरणस्य संरक्षणम् मानवानाम् अपि परमम् कर्त्तव्यम् अस्ति।

शब्दार्थ

पर्यावरणम् = वातावरण शोधयन्ति= शुद्ध करते हैं पादपानाम् = पौधों का

भूषयन्ति = सजाते हैं वसुधायाम् = धरती पर नाशयति = नष्ट करता है

परिवेशम् = आस-पास को (चौगिरदे को) विकृतम् = बिगड़ा हुआ

रम्या: = सुन्दर स्वास्थ्यवर्धका: = सेहत बढ़ाने वाले जनयति = पैदा करता है

रक्षक = रक्षा करने वाला भक्षक = खाने वाला

पर्यावरण संरक्षणाय = वातावरण की रक्षा करने के लिए।

अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) कौन से पदार्थ पर्यावरण की रचना करते हैं ?

(ख) जीव को जीवित रहने के लिये किन पदार्थों की आवश्यकता है ?

(ग) सूर्य जीवों को क्या देता है ?

(घ) मानव पौधों का विनाश क्यों करता है ?

(ङ) रक्षक पर्यावरण किस प्रकार भक्षक बनता है ?

प्रश्न 2. शुद्ध कथन पर (√) का चिह्न और अशुद्ध पर (x) का चिन्ह लगाओ-

(क) वन महोत्सव पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होता है।

(ख) वनों की कटाई से पर्यावरण स्वच्छ होता है।

(ग) वनों के विनाश से पर्यावरण विकृत हो जाता है।

(घ) विकृत पर्यावरण से रोग पैदा नहीं होते हैं।

प्रश्न 3. कोष्ठक में दिए गए पदों में से उपयुक्त पद चुनकर रिक्त स्थान भरो-

(क) पदार्था:.........सन्ति। (उपकारका:, संहारका:)

(ख) जीवा:.......विना न जीवन्ति। (फलम्, वायुम्)

(ग) सूर्य: जीवेभ्य:........यच्छति। (प्रकाशम्, अन्धकारम्)

प्रश्न 4. यथानिर्दिष्ट लकार-परिवर्तन करो:-

(क) पादपाः परिवेशम् भूषयन्ति। (लङ् लकार में)

(ख) वन-विभागः वनमहोत्सवम् मानयति। (लोट् लकार में)

(ग) पर्यावरणम् विकृतम् भवति। (लृट् लकार में)

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) वनों में जीव रहते हैं।

(ख) जीव पदार्थों को खाते हैं।

(ग) जीव वायु के बिना जीवित नहीं रह सकते।

(घ) पेड़ पर्यावरण को शुद्ध करते हैं।

*****

त्रयोविंशः पाठः

अभिमानस्य परिणामः

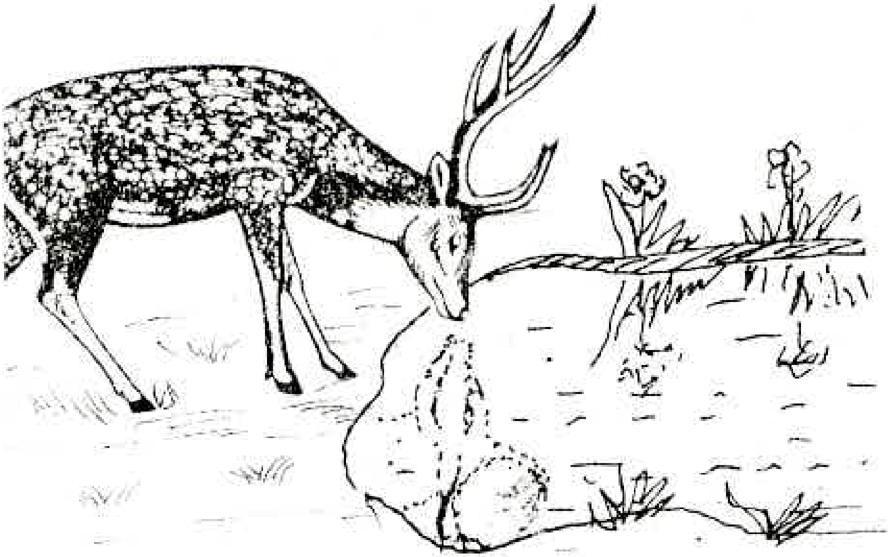

एकम् वनम् आसीत्। तत्र एकः द्वादशशृंगः मृगः अवसत्। एकदा सः सरोवरे निज भास्वरान् शृंगान् अपश्यत् अचिन्तयत् च-----''अहा! कति मनोहराः मम शृंगाः ?'' परम् निज कृशाः जंघाः दृष्ट्वा सः अति दुःखी अभवत्। सः अशोचत्......''ईश्वरः मया सह अन्यायम् अकरोत्। यदि मम जंघाः अपि सुन्दराः भवन्तु तदा का वार्ता ?''

अत्रान्तरे एकः व्याधः कुक्कुरैः सह तत्र आगच्छत्। द्वादशशृंगः व्याकुलः अभवत् व्याधम् च दृष्ट्वा अधावत्। कृशाः जंघाः तम् अतिदूरम् अनयन्। परम् तस्य मनोहराः शृंगाः तत्र कंटकेषु बद्धाः। सः शृंगान् मोचनाय अतीव प्रयत्नम् अकरोत् परम् असफलः अभवत्।

तदा सः अचिन्तयत्- ''अहम् मनोहर-शृंगेषु अभिमानम् अकरवम्। ते एव माम् कष्टे अपातयन्। परम् कृशाः जंघाः मम साहाय्यम् अकुर्वन्।''

अधुना सः अति दुःखी आसीत्। तदा एव कुक्कुराः तम् अमारयन् ।

सत्यम् एव-- अभिमानः पतनस्य कारणम् अस्ति।

शब्दार्थ

द्वाद्श श्रृंग = बारहसिंगा

व्याध: = शिकारी

भास्वरान् = चमकते हुओं को

बद्धा: = फंस गए

कति = कितने

अनयन् = ले गए

दृष्ट्वा = देख कर (दृश् + क्त्वा)

अधुना = अब

अत्रान्तरे = इसी बीच में

अवसत् = रहता था

कंटकेषु = कांटों में

अपश्यत् = देखा

अभिमानम् = अहंकार

जंघा = टांगें

साहाय्यम् = सहायता

पतनस्य = पतन का

मृग: = हरिण

कुक्कुरै: सह = कुत्तों के साथ

श्रृंगान् = सींगों को

मोचनाय = छुड़ाने के लिए।

कृशा: = कमजोर

अपातयन् = गिरा दिया

अशोचत् = सोचा

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में लिखो—

(क) बारहसिंगा कहाँ रहता था?

(ख) बारहसिंगे ने सरोवर में क्या देखा?

(ग) अपनी कमजोर टांगों को देखकर बारहसिंगे ने क्या सोचा?

(घ) बारहसिंगे को किस पर अभिमान था?

(ङ.) बारहसिंगे के पतन का कारण लिखो।

प्रश्न 2. (क) कथा का सार अपने शब्दों में लिखो।

(ख) इस कथा से क्या शिक्षा मिलती है?

प्रश्न 3. ठीक पर (✓) का चिन्ह और गलत पर (X) का चिन्ह लगाओ-

(क) 'अपश्यत्' लङ्. लकार का रूप है। ( )

(ख) 'अचिन्तयत्' लोट् लकार का रूप है। ( )

(ग) 'अभवत्' लङ् लकार का रूप है। ( )

(घ) 'भवन्तु' लोट् लकार का रूप है। ( )

(ङ.) 'अधावत्' लृट् लकार का रूप है। ( )

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में से ठीक शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरो :-

(दुःखी, ईश्वरः, कारणम्, वनम्)

(क) एकम्.........आसीत्।

(ख) सः अति.......अभवत्।

(ग) अभिमानः पतनस्य ....अस्ति।

(घ) ....मया सह अन्यायम् अकरोत्।

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) एक वन था।

(ख) बारहसिंगा दुःखी था।

(ग) बारहसिंगा व्याकुल हो गया।

(घ) अभिमान पतन का कारण है।

****

चतुर्विंशः पाठः

पितृभक्त-श्रवणः

श्रवणस्य जननी जनकः च वृद्धौ नेत्ररहितौ च आस्ताम्। श्रवणः सेवया तौ अनन्दयत्।

एकदा श्रवणः तौ तीर्थयात्रायै अनयत्। मार्गे निशा अभवत्। सः विहंगिकाम् वृक्षस्य अधः अस्थापयत्। सः जलाय नदस्य तटम् अगच्छत्।

तदा नृपः दशरथः बने अभ्रमत्। यदा सः पात्रे जलभरणस्य शब्दम् आकर्णयत्, तदा एव सः बाणम् अमुंचत्। बाणेन क्षतः श्रवणः हा पितः! हा अम्ब! इति अकथयत् अपतत् च? दुःखितः नृपः शीघ्रम् तत्र अगच्छत्। श्रवणः अकथयत्, ''नृप! शीघ्रम् मम पितृभ्याम् जलम् यच्छ।'' ततः सः प्राणान् अत्यजत्।

यदा जननी जनकः च नृपात् सुतमरणम् आकर्णयताम्, तदा तौ अतीव व्यलपताम् अशपताम् च ''भो नृप! पुत्र वियोगः एव तव मरणस्य कारणम् भविष्यति।'' ततः तौ प्राणान् अमुंचताम्।

शब्दार्थ

जलभरणस्य = जल भरने के

अनन्दयत् = प्रसन्न किया

आकर्णयत् = सुना	तीर्थयात्रायै = तीर्थ यात्रा के लिए	क्षत: = जख्मी
अनयत् = ले गया	हा अम्ब = हे माता	
निशा = रात	सुतमरणम् = बेटे की मृत्यु	विहंगिकाम् = वहंगी को
व्यलपताम् = विलाप करने लगे	अध: = नीचे	अशपताम् = शाप दे दिया
अस्थापयत् = रख दिया	पुत्रवियोग: = पुत्र का वियोग	मरणस्य = मृत्यु का

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में लिखो।

(क) श्रवण माता-पिता को कहाँ ले जा रहा था?

(ख) श्रवण को तीर किसने मारा?

(ग) श्रवण के माता-पिता ने राजा दशरथ को क्या शाप दिया?

(घ) मरते समय श्रवण ने राजा को क्या कहा?

प्रश्न 2. कोष्ठक में दिए गए पदों में से उपयुक्त पद चुनकर रिक्त स्थान भरो-

(क) दशरथ:..............अभ्रमत् (वने, नगरे)

(ख) मम पितृभ्याम्........यच्छ (फलम्, जलम्)

(ग) स:.......नदस्य तटम् अगच्छत्। (जलाय, फलाय)

प्रश्न 3. रेखांकित पदों में यथानिर्दिष्ट परिवर्तन करो:-

(क) श्रवण: तौ तीर्थ- यात्रायै <u>अनयत्</u>। (लृट् लकार)

(ख) <u>तौ</u> प्राणान् <u>अमुंचताम्</u> (एक वचन)

(ग) <u>स:</u> जलाय तटम् <u>अगच्छत्</u>। (उत्तम पुरुष)

प्रश्न 4. दिए गए उदाहरण की तरह नीचे लिखे शब्दों के सप्तमी विभक्ति में रूप लिखो:-

मार्गे	मार्गयो:	मार्गेषु
तट	--------	--------
नृप	--------	--------
वृक्ष	--------	--------
जनक	--------	--------

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) श्रवण ने माता-पिता को प्रसन्न किया।

(ख) राजा वन में घूम रहा था।

(ग) उसने बाण छोड़ दिया।

(घ) श्रवण पितृ-भक्त था।

****

पंचविंशः पाठः

नीति श्लोकाः

पुस्तकस्था तु या विद्या, पर-हस्त-गतं यत् धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या न तद् धनम्॥१॥
अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो **मित्रम्,** अमित्रस्य कुतः सुखम्॥२॥
दुर्जनः परिहर्तव्यो, विद्ययालंकृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः, किमसौ न भयंकरः॥३॥
अभिवादन-शीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या यशोबलम्॥४॥
उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥५॥

शब्दार्थ

परिहर्तव्यः = छोड़ देना चाहिए
उद्यमेन = परिश्रम से
अभिवादनशीलस्य = नमस्कार करने वाले का
सिध्यन्ति = सफल होते हैं
अलसस्य = आलसी का
वृद्धोपसेविनः = वृद्धों की सेवा करने वाले का
कार्यकाले समुत्पन्ने = समय आने पर
परहस्तगतं धनम् = दूसरे के हाथ में गया हुआ धन
अविद्यस्य = विद्या-हीन का

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखो—

(क) विद्या किस को प्राप्त नहीं हो सकती ?

(ख) दुर्जन की तुलना किस से की गई है ?

(ग) मनुष्य के कार्य किस से सिद्ध होते हैं ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थान भरो:-

(क) न हि सुप्तस्य -------प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

(ख) मणिना भूषितः -----किमसौ न भयंकरः।

(ग) अधनस्य कुतो ---- अमित्रस्य कुतः -------।

प्रश्न 3. हिन्दी में अनुवाद करो:-

(क) पुस्तकस्था तु या विद्या, पर-हस्त गतं यत् धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या न तद् धनम्।

(ख) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो :-

अविद्यस्य, उद्यमेन, परिहर्तव्यः, अलसस्य, अभिवादनशीलस्य।

प्रश्न 4. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) दुर्जन को छोड़ देना चाहिए।

(ख) कार्य परिश्रम से सिद्ध होते हैं।

(ग) आलसी को विद्या कहाँ?

(घ) साँप भयानक होता है।

****

व्याकरण-भागः

सन्धि

दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं।

सन्धि तीन प्रकार की होती है।

1. स्वर सन्धि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग सन्धि

नोट :- यहाँ पर हम पाठ्यक्रम के अनुसार स्वर सन्धि के तीन प्रकार पढ़ेंगे।

स्वर सन्धि

1. दीर्घ सन्धि

(क) अ या आ + अ या आ = दोनों मिलकर दीर्घ आ (अ/आ + अ/आ = आ)

उदाहरण :-

हिम	+	आलय:	=	हिमालय:
विद्या	+	आलय:	=	विद्यालय:
दया	+	आनन्द:	=	दयानन्द:
विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी
तथा	+	अपि	=	तथापि
प्रधान	+	आचार्य:	=	प्रधानाचार्य:

(ख) इ या ई + इ या ई = दोनों मिलकर दीर्घ ई (इ / ई + इ / ई = ई)

उदाहरण

रवि	+	इन्द्र:	=	रवीन्द्र
कवि	+	इन्द्र	=	कवीन्द्र:
परि	+	ईक्षा	=	परीक्षा
मुनि	+	ईश:	=	मुनीश:
नारी	+	इयम्	=	नारीयम्
नदी	+	ईश:	=	नदीश:

ग) उ या ऊ + उ या ऊ = दोनों मिलकर दीर्घ ऊ (उ / ऊ + उ / ऊ = ऊ)

उदाहरण :

गुरु	+	उपदेशः	=	गुरूपदेशः
भानु	+	उदय :	=	भानूदयः
वधू	+	उत्सवः	=	वधूत्सवः
सु	+	उक्तयः	=	सूक्तयः
भू	+	ऊर्ध्वम्	=	भूर्ध्वम्

(घ) ऋ या ॠ + ऋ या ॠ = दोनों मिलकर दीर्घ ॠ (ऋ / ॠ + ऋ / ॠ = ॠ)

उदाहरण :

पितृ	+	ऋणम्	=	पितॄणम्
मातृ	+	ऋणम्	=	मातॄणम्

2. गुण सन्धि :

(क) अ या आ + इ या ई = दोनों मिलकर ए (अ / आ + इ / ई = ए)

उदाहरण :

नर	+	इन्द्र	=	नरेन्द्रः
देव	+	इन्द्रः	=	देवेन्द्रः
सुर	+	ईशः	=	सुरेशः
महा	+	इन्द्रः	=	महेन्द्र
रमा	+	ईशः	=	रमेशः
महा	+	ईशः	=	महेशः

(ख) अ या आ + उ या ऊ + दोनों मिलकर ओ (अ / आ + उ / ऊ = ओ)

उदाहरण :

हित	+	उपदेशः	=	हितोपदेशः
पर	+	उपकारः	=	परोपकारः
सूर्य	+	उदयः	=	सूर्योदयः

(ग) अ या आ + ऋ या ॠ = दोनों मिलकर अर् (अ/आ + ऋ/ॠ = अर्)

उदाहरण :

देव	+	ऋषि:	=	देवर्षि:
महा	+	ऋषि:	=	महर्षि:
वसन्त	+	ऋतु:	=	वसन्तर्तु:
वर्षा	+	ऋतु:	=	वर्षर्तु:

3. वृद्धि सन्धि :-

(क) अ या आ + ए या ऐ = दोनों मिलकर ऐ (अ/आ + ए/ऐ = ऐ)

उदाहरण :

न + एव = नैव   च + एव = चैव

सदा + एव = सदैव   तथा + एव = तथैव

(ख) अ या आ + ओ या औ = दोनों मिलकर औ (अ/आ + ओ/औ = औ)

उदाहरण :

जल + ओका = जलौका

महा + औषधि: = महौषधि:

******

संज्ञा शब्दों के रूप

(क) इकारान्त पुंलिंग शब्द

मुनि

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पंचमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

कवि = कविता रचने वाला

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पंचमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे!	हे कवी !	हे कवयः !

कपि = बन्दर

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	कपिः	कपी	कपयः
द्वितीया	कपिम्	कपी	कपीन्
तृतीया	कपिना	कपिभ्याम्	कपिभिः
चतुर्थी	कपये	कपिभ्याम्	कपिभ्यः

पंचमी	कपे:	कपिभ्याम्	कपिभ्य:
षष्ठी	कपे:	कप्यो:	कपीनाम्
सप्तमी	कपौ	कप्यो:	कपिषु
सम्बोधन	हे कपे !	हे कपी !	हे कपय: !

रवि = सूर्य

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	रवि:	रवी	रवय:
द्वितीया	रविम्	रवी	रवीन्
तृतीया	रविणा	रविभ्याम्	रविभि:
चतुर्थी	रवये	रविभ्याम्	रविभ्य:
पंचमी	रवे:	रविभ्याम्	रविभ्य:
षष्ठी	रवे:	रव्यो:	रवीणाम्
सप्तमी	रवौ	रव्यो:	रविषु
सम्बोधन	हे रवे !	हे रवी !	हे रवय: !

उकारान्त पुंलिंग

साधु

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	साधु:	साधू	साधव:
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभि:
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्य:
पंचमी	साधो:	साधुभ्याम्	साधुभ्य:
षष्ठी	साधो:	साध्वो:	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वो:	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो !	हे साधू !	हे साधव: !

वायु = हवा

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	वायु:	वायू	वायव:
द्वितीया	वायुम्	वायू	वायून्
तृतीया	वायुना	वायुभ्याम्	वायुभि:
चतुर्थी	वायवे	वायुभ्याम्	वायुभ्य:
पंचमी	वायो:	वायुभ्याम्	वायुभ्य:
षष्ठी	वायो:	वाय्वो:	वायूनाम्
सप्तमी	वायौ	वाय्वो:	वायुषु
सम्बोधन	हे वायो !	हे वायू !	हे वायव: !

भानू = सूर्य

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	भानु:	भानू	भानव:
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानूभि:
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्य:
पंचमी	भानो:	भानुभ्याम्	भानुभ्य:
षष्ठी	भानो:	भान्वो:	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वो:	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो !	हे भानू !	हे भानव: !

पशु = जानवर

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	पशु:	पशू	पशव:
द्वितीया	पशुम्	पशू	पशून्
तृतीया	पशुना	पशुभ्याम्	पशुभि:
चतुर्थी	पशवे	पशुभ्याम्	पशुभ्य:

पंचमी	पशो:	पशुभ्याम्	पशुभ्य:
षष्ठी	पशो:	पश्वो:	पशूनाम्
सप्तमी	पशौ	पश्वो:	पशुषु
सम्बोधन	हे पशो !	हे पशू !	हे पशव: !

शिशु = बच्चा

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	शिशु:	शिशू	शिशव:
द्वितीया	शिशुम्	शिशू	शिशून्
तृतीया	शिशुना	शिशुभ्याम्	शिशुभि:
चतुर्थी	शिशवे	शिशुभ्याम्	शिशुभ्य:
पंचमी	शिशो:	शिशुभ्याम्	शिशुभ्य:
षष्ठी	शिशो:	शिश्वो:	शिशूनाम्
सप्तमी	शिशौ	शिश्वो:	शिशुषु
सम्बोधन	हे शिशो !	हे शिशू !	हे शिशव: !

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

लता = बेल

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	लता	लते	लता:
द्वितीया	लताम्	लते	लता:
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभि:
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्य:
पंचमी	लताया:	लताभ्याम्	लताभ्य:
षष्ठी	लताया:	लतयो:	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयो:	लतासु
सम्बोधन	हे लते !	हे लते !	हे लता: !

माला

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	माला	माले	मालाः
द्वितीया	मालाम्	माले	मालाः
तृतीया	मालया	मालाभ्याम्	मालाभिः
चतुर्थी	मालायै	मालाभ्याम्	मालाभ्यः
पंचमी	मालायाः	मालाभ्याम्	मालाभ्यः
षष्ठी	मालायाः	मालयोः	मालानाम्
सप्तमी	मालायाम्	मालयोः	मालासु
सम्बोधन	हे माले !	हे माले !	हे मालाः !

बालिका = (बच्ची)

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिकाः
द्वितीया	बालिकाम्	बालिके	बालिकाः
तृतीया	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभिः
चतुर्थी	बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
पंचमी	बालिकायाः	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
षष्ठी	बालिकायाः	बालिकयोः	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयोः	बालिकासु
सम्बोधन	हे बालिके !	हे बालिके !	हे बालिकाः !

छात्रा

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	छात्रा	छात्रे	छात्राः
द्वितीया	छात्राम्	छात्रे	छात्राः
तृतीया	छात्रया	छात्राभ्याम्	छात्राभिः
चतुर्थी	छात्रायै	छात्राभ्याम्	छात्राभ्यः

पंचमी	छात्रायाः	छात्राभ्याम्	छात्राभ्यः
षष्ठी	छात्रायाः	छात्रयोः	छात्राणाम्
सप्तमी	छात्रायाम्	छात्रयोः	छात्रासु
सम्बोधन	हे छात्रे !	हे छात्रे !	हे छात्राः !

रमा

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पंचमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे !	हे रमे !	हे रमाः !

सर्वनाम शब्द :- नाम शब्द के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। सातवीं श्रेणी के पाठ्यक्रम में सर्वनाम शब्दों के रूप चतुर्थी विभक्ति तक ही है।

तद् = वह (पुंल्लिंग)

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् = नपुंसक लिंग

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् = स्त्रीलिंग

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

एतद् = यह पुंल्लिंग

प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतद् = नपुंसकलिंग

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतद् = स्त्रीलिंग

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

किम् = (कौन) पुंल्लिंग

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् = नपुंसकलिंग

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कै:
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्य:
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्य:
षष्ठी	कस्य	कयो:	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयो:	केषु

किम् = (कौन) पुंल्लिंग

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	का	के	का:
द्वितीया	काम्	के	का:
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभि:
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्य:
पंचमी	कस्या:	काभ्याम्	काभ्य:
षष्ठी	कस्या:	कयो:	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयो:	कासु

अस्मद् = हम (तीनों लिंगों में समान)

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभि:
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयो:	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयो:	अस्मासु

युष्मद्- तुम (तीनों लिंगों में समान)

विभक्ति	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

*****

संख्यावाचक शब्द

एक से चार तक संख्यावाची पदों के रूप तीनों लिंगों में भिन्न-भिन्न होते हैं। उसके पश्चात तीनों लिंगों में समान रूप होते हैं। नीचे एक से बीस तक संख्यावाची शब्दों के रूप केवल प्रथमा विभक्ति में दिए गए हैं। बाद में 'एक' और 'द्वि' के रूप तीनों लिंगों और सातों विभक्तियों में दिए गए हैं।

संस्कृत संख्या शब्द
केवल प्रथमा विभक्ति में

अंक	हिन्दी संख्या	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
1	एक	एकः	एका	एकम्
2	दो	द्वौ	द्वे	द्वे
3	तीन	त्रयः	तिस्त्रः	त्रीणि
4	चार	चत्वारः	चतस्त्रः	चत्वारि
(सब लिंगो में समान)				
5	पांच	पञ्च		
6	छः	षट्		
7	सात	सप्त		
8	आठ	अष्ट		
9	नौ	नव		
10	दस	दश		

11	ग्यारह	एकादश
12	बारह	द्वादश
13	तेरह	त्रयोदश
14	चौदह	चतुर्दश
15	पन्द्रह	पञ्चदश
16	सोलह	षोडश
17	सतरह	सप्तदश
18	अठारह	अष्टादश
19	उन्नीस	नवदश, एकोनविंशति
20	बीस	विंशति:

एक (1) (केवल एकवचन में)

विभक्ति	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	एक:	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पंचमी	एकस्मात्	एकस्या:	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्या:	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि = दो (2) केवल द्विवचन में

विभक्ति	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पंचमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:
सप्तमी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:

****

धातु रूप

लट् लकार (वर्तमान काल)

(क) भ्वादिगण - परस्मैपद धातुएं

√स्था (तिष्ठ्) = ठहरना

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठत:	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथ:	तिष्ठथ:
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठाव:	तिष्ठाम:

√दृश् (पश्य्) = देखना

प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यत:	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथ:	पश्यथ:
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्याव:	पश्याम:

√भू (भव्) = होना

प्रथम पुरुष	भवति	भवत:	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथ:	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवाव:	भवाम:

√भ्रम् = भ्रमण करना

प्रथम पुरुष	भ्रमति	भ्रमत:	भ्रमन्ति
मध्यम पुरुष	भ्रमसि	भ्रमथ:	भ्रमथ
उत्तम पुरुष	भ्रमामि	भ्रमाव:	भ्रमाम:

√तृ (तर्)= पार करना

प्रथम पुरुष	तरति	तरत:	तरन्ति
मध्यम पुरुष	तरसि	तरथ:	तरथ
उत्तम पुरुष	तरामि	तराव:	तराम:

तुदादिगण

√स्पृश्= छूना

प्रथम पुरुष	स्पृशति	स्पृशत:	स्पृशन्ति
मध्यम पुरुष	स्पृशसि	स्पृशथ:	स्पृशथ
उत्तम पुरुष	स्पृशामि	स्पृशाव:	स्पृशाम:

√प्रच्छ् (पृच्छ) = पूछना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

√क्षिप् = फेंकना

प्रथम पुरुष	क्षिपति	क्षिपतः	क्षिपन्ति
मध्यम पुरुष	क्षिपसि	क्षिपथः	क्षिपथ
उत्तम पुरुष	क्षिपामि	क्षिपावः	क्षिपामः

दिवादिगण

√तुष् (तुष्य) = सन्तुष्ट होना

प्रथम पुरुष	तुष्यति	तुष्यतः	तुष्यन्ति
मध्यम पुरुष	तुष्यसि	तुष्यथः	तुष्यथ
उत्तम पुरुष	तुष्यामि	तुष्यावः	तुष्यामः

√शुष् (शुष्य) = सूखना

प्रथम पुरुष	शुष्यति	शुष्यतः	शुष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शुष्यसि	शुष्यथः	शुष्यथ
उत्तम पुरुष	शुष्यामि	शुष्यावः	शुष्यामः

√कुप् (कुप्य) = क्रोध करना

प्रथम पुरुष	कुप्यति	कुप्यतः	कुप्यन्ति
मध्यम पुरुष	कुप्यसि	कुप्यथः	कुप्यथ
उत्तम पुरुष	कुप्यामि	कुप्यावः	कुप्यामः

चुरादिगण

√चुर् (चोरय) = चुराना

प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

√भक्ष् (भक्षय) = खाना

प्रथम पुरुष	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उत्तम पुरुष	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

√ क्षल् (क्षाल) क्षालय = धोना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्षालयति	क्षालयतः	क्षालयन्ति
मध्यम पुरुष	क्षालयसि	क्षालयथः	क्षालयथ
उत्तम पुरुष	क्षालयामि	क्षालयावः	क्षालयामः

भ्वादिगण

√ स्था = (लोट् लकार)

प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

√ दृश् = देखना

प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

√ भू = होना

प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

√ भ्रम् = घूमना

प्रथम पुरुष	भ्रमतु	भ्रमताम्	भ्रमन्तु
मध्यम पुरुष	भ्रम	भ्रमतम्	भ्रमत
उत्तम पुरुष	भ्रमाणि	भ्रमाव	भ्रमाम

√ तॄ = पार करना

प्रथम पुरुष	तरतु	तरताम्	तरन्तु
मध्यम पुरुष	तर	तरतम्	तरत
उत्तम पुरुष	तराणि	तराव	तराम

तुदादिगण

√ स्पृश् = छूना

प्रथम पुरुष	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
मध्यम पुरुष	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
उत्तम पुरुष	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

√प्रच्छ् = पूछना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

√क्षिप् = फेंकना

प्रथम पुरुष	क्षिपतु	क्षिपताम्	क्षिपन्तु
मध्यम पुरुष	क्षिप	क्षिपतम्	क्षिपत
उत्तम पुरुष	क्षिपाणि	क्षिपाव	क्षिपाम

√दिवादिगण

√तुष्

प्रथम पुरुष	तुष्यतु	तुष्यताम्	तुष्यन्तु
मध्यम पुरुष	तुष्य	तुष्यतम्	तुष्यत
उत्तम पुरुष	तुष्याणि	तुष्याव	तुष्याम

√शुष्

प्रथम पुरुष	शुष्यतु	शुष्यताम्	शुष्यन्तु
मध्यम पुरुष	शुष्य	शुष्यतम्	शुष्यत
उत्तम पुरुष	शुष्याणि	शुष्याव	शुष्याम

√कुप्

प्रथम पुरुष	कुप्यतु	कुप्यताम्	कुप्यन्तु
मध्यम पुरुष	कुप्य	कुप्यतम्	कुप्यत
उत्तम पुरुष	कुप्यानि	कुप्याव	कुप्याम

चुरादिगण

√चुर्

प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

√ कथ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम

√ भक्ष्

प्रथम पुरुष	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
मध्यम पुरुष	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उत्तम पुरुष	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

√ क्षल्

प्रथम पुरुष	क्षालयतु	क्षालयताम्	क्षालयन्तु
मध्यम पुरुष	क्षालय	क्षालयतम्	क्षालयत
उत्तम पुरुष	क्षालयानि	क्षालयाव	क्षालयाम

लङ्. लकार (भूतकाल)

भ्वादिगण

√ स्था

प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम्

√ दृश्

प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

√ भू

प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

√ भ्रम्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन्
मध्यम पुरुष	अभ्रमः	अभ्रमतम्	अभ्रमत
उत्तम पुरुष	अभ्रमम्	अभ्रमाव	अभ्रमाम

√ तृ

प्रथम पुरुष	अतरत्	अतरताम्	अतरन्
मध्यम पुरुष	अतरः	अतरतम्	अतरत
उत्तम पुरुष	अतरम्	अतराव	अतराम

√ तुदादिगण

√ स्पृश्

प्रथम पुरुष	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
मध्यम पुरुष	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उत्तम पुरुष	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

√ प्रच्छ्

प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

√ क्षिप्

प्रथम पुरुष	अक्षिपत्	अक्षिपताम्	अक्षिपन्
मध्यम पुरुष	अक्षिपः	अक्षिपतम्	अक्षिपत
उत्तम पुरुष	अक्षिपम्	अक्षिपाव	अक्षिपाम

दिवादिगण

√ तुष्

प्रथम पुरुष	अतुष्यत्	अतुष्यताम्	अतुष्यन्
मध्यम पुरुष	अतुष्यः	अतुष्यतम्	अतुष्यत
उत्तम पुरुष	अतुष्यम्	अतुष्याव	अतुष्याम

√ शुष्

प्रथम पुरुष	अशुष्यत्	अशुष्यताम्	अशुष्यन्
मध्यम पुरुष	अशुष्यः	अशुष्यतम्	अशुष्यत
उत्तम पुरुष	अशुष्यम्	अशुष्याव	अशुष्याम

√ कुप्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकुप्यत्	अकुप्यताम्	अकुप्यन्
मध्यम पुरुष	अकुप्य:	अकुप्यतम्	अकुप्यत
उत्तम पुरुष	अकुप्यम्	अकुप्याव	अकुप्याम

चुरादिगण

√ चुर्

प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरय:	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम्

√ कथ्

प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम पुरुष	अकथय:	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

√ भक्ष्

प्रथम पुरुष	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
मध्यम पुरुष	अभक्षय:	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उत्तम पुरुष	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

√ क्षल्

प्रथम पुरुष	अक्षालयत्	अक्षालयताम्	अक्षालयन्
मध्यम पुरुष	अक्षालय:	अक्षालयतम्	अक्षालयत
उत्तम पुरुष	अक्षालयम्	अक्षालयाव	अक्षालयाम

केवल लृट् लकार में

√ चर् = चरना

प्रथम पुरुष	चरिष्यति	चरिष्यत:	चरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चरिष्यसि	चरिष्यथ:	चरिष्यथ
उत्तम पुरुष	चरिष्यामि	चरिष्याव:	चरिष्याम:

√चल् = चलना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
उत्तम पुरुष	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः

√गम् = जाना

प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

√धाव् = दौड़ना

प्रथम पुरुष	धाविष्यति	धाविष्यतः	धाविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	धाविष्यसि	धाविष्यथः	धाविष्यथ
उत्तम पुरुष	धाविष्यामि	धाविष्यावः	धाविष्यामः

√खेल्= खेलना

प्रथम पुरुष	खेलिष्यति	खेलिष्यतः	खेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खेलिष्यसि	खेलिष्यथः	खेलिष्यथ
उत्तम पुरुष	खेलिष्यामि	खेलिष्यावः	खेलिष्यामः

√हस् = हँसना

प्रथम पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

√पठ् = पढ़ना

प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

√पत् = गिरना

प्रथम पुरुष	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पतिष्यसि	पतिष्यथः	पतिष्यथ
उत्तम पुरुष	पतिष्यामि	पतिष्यावः	पतिष्यामः

शब्दकोष:

(अ)

अंक:—गोद
अलस: (वि.)—आलसी
अद्यत्वे (अव्यय)—आजकल
अम्बा (स्त्री)—माँ
अत्रान्तरे (अव्यय)—इसी बीच में
अग्रे (अव्यय)—आगे
अध: (अव्यय)—नीचे
अश्वारोहणम् (नपुं) —घुड़सवारी
अनुजा (स्त्री.)—छोटी बहन
अन्यथा (अव्यय)—नहीं तो
अधुना (अव्यय)—अब
अनुशासनम् (नपुं.) —नियम
अद्यापि (अव्यय) —आज भी
अद्वितीय (वि.)— जिसके समान कोई दूसरा न हो
अर्थ: (पुं.)—मतलब
अर्धावकाश: (पुं.)—आधी छुट्टी
अहिंसा पूजक: (पुं.)—अहिंसा का पुजारी
अविद्य: (वि.)—अनपढ़
अभिवादनशील: (वि.)—नमस्कार करने वाला
अनृतम् (नपुं.) —झूठ
अभिरुचि: (स्त्री.)—दिलचस्पी
अनेकदा (अव्यय)—अनेक बार
अभिमान (पुं)—अहंकार
अतीव (अव्यय)—बहुत
अभित: (अव्यय)—दोनों ओर
अनेक : (सर्व.)- बहुत

(आ)

आत्मवत्—अपने समान
आभरणम् (नपुं) —गहना
आदर्श: (पुं.)—नमूना
आदाय (अव्यय)—लेकर
आगत: (वि.)—आ गया
आचार: (पुं.)—सदाचार
आपण: (पुं.)—दुकानदार
आधार: (पुं.)—मूल
आदर्शभूत: (वि.)—आदर्श बने हुए
आदेश: (पुं.)—आज्ञा

(इ)

इतस्तत: (अव्यय)—इधर-उधर

(उ)

उपचार: (पुं.)—इलाज
उत्प्लवनम् (नपुं.)—उछलना
उद्यत: (वि.)—तैयार
उपवनम् (नपुं.)—बगीचा
उपहास: (पुं.)— हँसी
उपरि (अव्यय)—ऊपर
उदारता (स्त्री)—खुलदिली
उदार चरित: (वि.)—खुले दिल वाला
उच्चै: (अव्यय.)—ऊँची-ऊँची
न्यायालय: (पुं.)—हाईकोर्ट

(ए)

एव (अव्यय)—ही
एवम् (अव्यय)—इस प्रकार
एकदा (अव्यय)—एक बार

(औ)

औषधालय: (पुं.)—अस्पताल

(क)

कलरव: (पुं.)—मधुर धीमी आवाज़
कवचम् (नपुं.)—लोहे का वस्त्र
कति — कितने

कटितटः —कमर का भाग
कर-कन्दुकम् (नपुं.)—वॉलीबाल
कन्दुकम् (नपुं.)—गेंद
कपिशः (वि.)—भूरा
कदाचित् (अव्यय)—कभी
कपोतः (पुं.)—कबूतर
कंठः (पुं.)—गला
कंटकम् (नपुं.)—कांटा
काकः (पुं.)—कौआ
कार्यकालः (पुं.)—काम का समय
काष्ठफलकम् (नपुं.)—मेज़
किमर्थम् (अव्यय)—क्यों
ः अपि —कोई भी
कुशलः (वि.)—चतुर
कुटुम्बकम् (नपुं.)—परिवार
र्दनम् (नपुं.)—कूदना
जनम् (नपुं.)—चहचहाहट
ते (अव्यय)—लिये
ष्णः (वि.)—काला
शः (वि.)— कमजोर
किलः (पुं.)—कोयल

(क्ष)

ः (वि.)—नीच
ः (वि.)—जख्मी
दः (वि.)—कल्याणकारी

(ख)

ः (पुं.)—पक्षी

(ग)

नाः (स्त्री.)—गिनती
: (स्त्री)—चाल, वेग
(वि.)—बीता हुआ
यसी (स्त्री.)—बढ़कर
(स्त्री.)—गर्दन

गोधूमः (पुं.)—गेहूँ

(घ)

घंटिका (स्त्री)— घँटी

(च)

चक्रम् (नपुं.)—पहिया
चरण पथः (पुं.)—फुटपाथ
चाँदनी-चत्वरे (पुं.)— चाँदनी चौक में
चतुष्पदः (वि.)—चौपाया
चीत्कारः (पुं.)—चीख
चित्रः (वि.)—रंग-बिरंगा

(ज)

जंघा (स्त्री.)—टाँग
जन्तुशाला (स्त्री.)—चिड़िया घर
जन्मतः (अव्यय)—जन्म से
जननी (स्त्री.)—माता
जनकः (पुं.)—पिता
जानु (नपुं.)—घुटना
जलभरणस्य शब्दः (पु.) जलभरने की आवाज़

(त)

तत्र (अव्यय)—वहाँ
तमः (नपुं.)—अन्धकार
तत्परः (वि.)—तैयार
तीर्थ यात्रा (स्त्री.)—तीर्थ की यात्रा
तृणम् (नपुं.)—घास

(द)

दर्शनीयः (वि.)—देखने योग्य
दक्षिणतः (अव्यय)—दायीं ओर से
दानवः (पुं.)—राक्षस
द्वाद्वश श्रृंगः (पुं.)—बारहसिंगा
दीपस्तम्भः (पुं.)—रोशनी का खम्बा
दुःखित (वि.)—दुःखी
दृष्ट्वा (अव्यय)—देखकर
दैवम् (नपुं.)—भाग्य

दैन्यम् (नपुं)—दीनता
दोला (स्त्री.)—झूला

(घ)

धनधान्यसम्पन्न (वि.)—धन और अनाज से भरपूर
धनिकः (पुं.)—अमीर
धरा (स्त्री.)—धरती
धर्मरक्षा (स्त्री.)—धर्म की रक्षा

(न)

नवम् (वि.)—नवीन
नवमः (वि.)—नौवां
नव प्रकारः (वि.)—नए प्रकार का
नवनीतम् (नपुं.)—माखन
नवांकुरः (पुं.)—नई कोंपल
नानावर्णः (वि.)—अनेक रंगों वाला
निजः —अपना
निशा (स्त्री.)—रात

(प)

पंचापः (पुं.)—पंजाब
परिवेशः (पुं.)—आस-पास
पठनम् (नपुं.)—पढ़ना
पल्लवम् (नपुं)—पत्ता
परितः (अव्यय)—चारों ओर
परहितम् —दूसरों की भलाई
परदाराः (नपुं.)—दूसरों की **पत्नियाँ**
पर्यावरणम् (नपुं.)—वातावरण
पत्रालयः (पुं.)—डाकघर
परमम् —श्रेष्ठ
परम् (अव्यय)—परन्तु
पतनम् (नपुं.)—गिरना
पाकः (पुं.)—पकना
पंडितः (वि.)—विद्वान्
परः —पराया
परिहर्तव्यः (वि.)—छोड़ देना चाहिए
पशु चारकः (पुं.)—चरवाहा
पार्श्वे (अव्यय)—पास
पादपः (पुं.)—पौधा
पीतः (वि.)—पीला
पिकः (पुं.)—कोयल
पुस्तकालयः—लाइब्रेरी
पुष्पम् (नपुं)—फूल
पुरुषकारः (पुं.)—परिश्रम
पुत्रवियोग (पुं.)—पुत्र से वियोग
पुच्छः (पुं.)— **पूँछ**
प्रयोजनम् (नपु)—लाभ
प्रगतिः (स्त्री.)—उन्नति
प्रमादः (पुं.)—आलस्य
प्रच्छदः (पुं.)—चादर
प्रांगणम् (नपुं.)—आँगन
प्रतिबिम्बम् (नपुं.)—परछाई

(ब)

बकः (पुं.)—बगुला
बलम् (नपुं.)—बल
बद्धः (वि.)—फंसा हुआ
बदरिकाकारः (वि.)—बेर के फल जैसा
बाल्यकालः (पुं.)—बचपन

(भ)

भक्षणम् (नपुं.)—खाना
भगिनी (स्त्री.)—बहन
भद्र पुरुषः (पुं.)—भला आदमी
भास्वरः (वि.)—चमकदार
भूषणम् (नपुं.)—गहना
भ्राता (पुं.)—भाई
भेडा (स्त्री.)—भेड़

(म)

मशकः (पुं.)—मच्छर

मनोरमः (वि.)—सुन्दर
मन्दः (वि.)—ढीला
महाशयः (वि.)—उदार पुरुष
मधुरम् (वि.)—मीठा
मनुजः (पुं.)—मनुष्य
मानचित्रम् (नपुं.)—नक्शा
मानवः (पुं.)—मनुष्य
मातृवत् : (पुं.)—माता के समान
मालाकारः (पुं.)—माली
महाकाय (वि.)—विशाल शरीर वाला
मृगः (पुं.)—हरिण
म्लानम् (वि.)—मुरझाया हुआ
मेलक : (पुं.)—मेला
मोहनम् (नपुं.)—मोह लेने वाला
मोदकः—लड्डू
मोचनम् (नपुं.)—छुड़ाना, निकालना

(य)

यन्त्रकारः (पुं.)—इंजीनियर
यथेच्छम् (नपुं.)—अपनी इच्छा अनुसार
यतः (अव्यय)—क्योंकि
यानम् (नपुं.)—गाड़ी
यातायातम् (नपुं.)—आना-जाना
योधः (पुं.)—योद्धा

(र)

रम्यः (वि.)—सुन्दर, सुहावना
रक्षकः (पुं.)—रक्षा करने वाला
रिक्तहस्त : (वि.)—खाली हाथ
रूपम् —शक्ल
रुचिकरः (वि.)—मनपसन्द
रेचनयन्त्रम् (नपुं.)—पिचकारी

(ल)

लता (स्त्री.)—बेल
लगुडः (पुं.)—लाठी
लघु चेतः —छोटे दिलवाला
लाभप्रदः (वि.)—लाभदायक
लोष्ठवत् — मिट्टी के ढेले के समान
लोहितः (वि.)—लाल

(व)

वरम्—अच्छा
वन्यः (वि.)—जंगली
वसुधा (स्त्री.)—धरती
वल्गा (स्त्री.)—लगाम
वामतः (अव्यय)—बायीं ओर से
विंशतिः (स्त्री.)—बीस
विद्याधनम् : (नपुं.)—विद्या रूपी धन
वाहनम् (नपुं.)—गाड़ी
विहंगिका (स्त्री.)—बहंगी
विविधम् (वि.)—अनेक प्रकार का
विकृतम् (वि.)—खराब
विश्वः (पुं.)—संसार
विमला (वि.)—पवित्र
वृषभः (पुं.)—बैल
वेगः (पुं.)—गति
वेणुवादनम् (नपुं.)—बाँसुरी बजाना
व्याघ्रः (पुं.)—बाघ
व्याधः (पुं.)—शिकारी

(श)

शस्यम् (नपुं.)—फसल
शठः (वि.)—दुष्ट
शतम् (नपुं.)—सौ
शीर्षम् (नपुं.)—सिर
शुकः (पुं.)—तोता
शृंगः (पुं.)—सींग
शोभनम् (नपुं.)—अच्छा
श्वेतः (वि.)—सफेद
शाठ्यम् (नपुं.)—दुष्टता

श्रुत्वा (अव्यय)—सुनकर
श्रोत्रम् (नपुं.)—कान

(स)

संचितम् (वि.)—इकट्ठा किया हुआ
संगीतमयम् (वि.)—संगीत से भरा हुआ
संहतिः (स्त्री.) एकता
सर्पः (पुं.)— साँप
सलीलम् (क्रि.वि.)—धीरे-धीरे
सहितम् —साथ
सत्यतः (अव्यय)—सचमुच
सहायभूतः (वि.)—सहायक
सहायकः (वि.)—सहायता करने वाला
सर्षपपादप (पुं.)—सरसों का पौधा
सर्वविघ्ननाशकः —सभी विघ्नों का नाश करने वाला
सर्वत्र (अव्यय)—सब जगह पर
सह (अव्यय)—साथ
सर्वम्—सब कुछ
सुतः (पुं.)—बेटा
साहाय्यम् (नपुं.)—सहायता
सुप्तः (वि.)—सोया हुआ
सर्वतः (अव्यय)—सब ओर, चारों ओर
सिद्धिः (स्त्री.)—सफलता
सोपानम् (नपुं.)—सीढ़ी
सौन्दर्यम् (नपुं.)—सुन्दरता
स्म (अव्यय)—था, भूतकाल के अर्थ में आता है
स्वर्णम् (अव्यय)—सोना
स्वच्छता (स्त्री.)— सफ़ाई
स्नेहः (पुं.)—प्यार
स्वस्थम् (वि.)—तन्दरुस्त
स्वास्थ्यवर्धकः (वि.)—सेहत बढ़ाने वाला
स्वम्—अपने को

(ह)

ह्रस्वः (वि.)—छोटा
हितम् —हितकर
हरितः (वि.)—हरा
होलिका (स्त्री.)—होली
हृष्ट-पुष्टः (वि.)—तन्दरुस्त